# मनक मैल

टनका, वाका, हाइकू, शैर्न्यू संग्रह



राम विलास साहु

# मनक मैल

राम विलास साहु

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

**ISBN :** 978-93-88421-81-2

**दाम :** 200/- (भा. रू.)

**पहिल संस्करण :** 2018

**प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन**
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल,  बिहार : 847452

**वेबसाइट :** http://pallavipublication.blogspot.com
**ई-मेल :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
**मोबाइल :** 8539043668, 9931654742

**प्रिन्ट :** मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
**आवरण :** श्रीमती पुनम मण्डल

**MANAK MAIL (मनक मैल)**
*Anthology of Maithili Tanka and Haikoo-Shainaru by Shri. Ram Vilas Sahu.*

# समर्पण

दरकैत छातीकेँ जे जोड़ए
झहरैत नोरकेँ पोछए आबि
सतैत बढ़ए जे अग्नि केर पथपर
मैथिल-मिथिला केर करए विकास

**राम विलास**

# अनुक्रम

ज्ञानक खान
समाजक दर्पण
साहित्य अछि
अमृतक खजाना
पढ़ि बनू विद्वान

श्रेष्ठ साहित्य
सागरसँ गहींर
गोंता लगाऊ
जिनगी बदलत
भेटत आत्म ज्ञान

भाषा ज्ञानक
जननी कर्मभूमि
देशक मान
जनगण कल्याण
विकासक निर्माण

मधुर भाषा
सभक मन जीत
उच्च आसन
सम्मान दियाबैए
दुखसँ बँचबैए

मनक मैल
विचार बदलैए
समाज देश
दुनूकेँ बिगाड़ैए
मन रोग बढ़ा कऽ

मनक मैल
छबिकेँ बिगाड़ैए
जनहित नै
स्वार्थी बनबैए
कुबाट चलबैए

अमृत वाणी
जनहित करैए
नदीक पानि
शीतल, नहि हानि
पोखैर राखै मान

जन्मदातासँ
पालनकर्त्ता पैघ
मारैबलासँ
बँचबैबला श्रेष्ठ
जन्मभूमिसँ के छी?

माता कुमाता
कहियो ने होइए
पिता पुत्रक
हत्यारा नै होइए
कहै छैथ विद्वान

कर्मयोगीकेँ
भोगी निर्वल कहि
जोंक बनि कऽ
हकमारी करैए
उन्टे नर्क भेजैए

श्रमशीलकेँ
लोक हीन बुझैए
हिस्सा लूटि कऽ
भोगी जोगी खाइए
स्वार्थ सिद्ध करैए

परिश्रमक
मोल अनमोल छै
नै बिकै तौल
जे जानैए ई मोल
से जन ज्ञानी होय

दुख सहैले
गरीब जनमैए
सुख भोगैले
भोगी ठग महंथ
तियागी संत अछि

असल सन्त
जनहित करैए
सुर, तुलसी
कबीर, रैयदास
चारू युगक दास

सत्यक वाणि
नै होइए उवाणि
हेतै कुवाणि
धर्मकेँ हेतै हानि
बढ़ि जेतै अज्ञान

बाट बटोही
संग मिलि चलैए
एक थकैए
दोसर अछि थीर
के होइए अधीर

चोर कहियो
इजोत नै सहैए
भोगी कहियो
दुख नहि सकैए
के भोगत ई दुख?

मनक शान्ति
साहित्यसँ भेटैए
राष्ट्र निर्माण
समाज कल्याण-ले
ज्ञानी बाँटैए ज्ञान

असल प्रेम
साहित्यसँ करियौ
ज्ञान बढ़त
समाज सुधरत
सुख शान्ति भेटत

बिनु बजने
लोक बुझत केना
जँ बाजै छी तँ
होइए नकीहानि
उन्टे जाइए जान

बरसु मेघ
एहि बाग-बोनमे
पानिक त्रास
बेसी बनि गेल-ए
खेत सुखि जरैए

रूसल मेघ
मन नहि मानए
मानत केना
जखैन बरसत
तखने ने बिश्वास

मेध देख
मन हरिया गेल
जे गरजत
से बरसत नहि
केना बँचत प्राण

जे गरजैए
से नहि बरसैए
चुप्पे रहने
खेत बाग जरैए
प्यासे लोक मरैए

लोक कहैए
इंसान पत्थरसँ
कम नै अछि
अखनो तँ विवेक
बुझू मरले अछि

कहै लेल तँ
विवेक मरल-ए
मुदा कठोर
इंसान जगलासँ
आतंक तँ बढ़ैए

किए इंसान
लूट हत्या करैए
रावण कंस
बनि खून पीबैए
इमान की कहैए?

एते निष्ठुर
मनुख किए भेल
दुश्मन बनि
मनुखे मनुखक
हत्यारा बनि गेल

धरती डोलि
कानि-कानि कहैए
सभ डरल
सामन्तक जड़िमे
आतंक जनमल

जवाब देतै
सहए तँ दोषी छै
चुप्पी सधने
मुँह सीने रहै छै
दीन दुख सहै छै

जे जनमल
एक दिन मरत
किए होइए
लोभी स्वीर्थे अधीर
जगत अछि धीर

सोच बदैल
नेक इंसान बनु
घिनौना काज
छोड़ि कल्याण करू
हेतै नव निर्माण

सत्यक बाट
चलए जँ इंसान
आगू बढ़ैत
आगि नहि पकत
नहि पानि सड़त

कर्मकेँ छोड़ि
लोक धर्म खोजैए
भवलोकमे
भगवान खोजैए
नर्क भोग भोगैए

हारल दिल
थाकल तन मन
अकैर गेल
जिनगी अगहए
जगत छुटि गेल

मनक मैल
नै छुटल तीर्थसँ
स्वर्ग खोजैमे
मरणासन भेल
कर्त्तव्यक खेलमे

मोह बन्धन
फँसि वौआए गेलौं
बाट भुलि कऽ
लक्ष्यहीन बनलौं
आडम्बर देख कऽ

ठगक मेला
पाखण्डीक दोकान
सज्जन जन
पाप कीनै-बेचैए
पुण्य-पापक खान

अपन बात
लोक दाबि रखैए
अपन दुख
अपनेसँ सिरैज
ओझरा कऽ मरैए

स्वर्ग कहि कऽ
गामकेँ लजबैए
नहि सुविधा
सड़क बिजलीक
खेती पछारू अछि

गाम छोड़ि कऽ
परदेशिया बनि
खटैए लोक
गाममे नै उद्योग
पेटक समस्या-ए

सभक पेट
भरैबला मरैए
भुखले पेट
धिया-पुता बिलैट
अनाथ बनल-ए

कहै लेल तँ
रीढ़ अछि किसान
मुदा जीवन
देखू बेवस्था खेल
खेती चौपट्ट भेल

उत्तम खेती
कहैबला नै कियो
साधनहीन
खेतीक काज भारी
माथ पीटै किसान

मरि जीबि कऽ
किसान खेती करै
खा गेल रौदी
धिया-पुता कनैए
भुखै साँझ-विहान

केना बँचत
इज्जत आ आबरू
नहि सुरक्षा
दिन अपहरण
राति हत्या होइए

देश अजाद
मुदा खेती उद्योग
नै सुधरल
नै भेटल सुविद्या
की करत विधाता

गामक गाम
खाए सुते बलान
बालुक ढेर
उड़बै आसमान
केना बँचत प्राण

कोसी बलान
कमलामे उफान
एलै तूफान
भँसिया गेल गाम
मरल स्वाभिमान

विकराल छै
कोसीक बाढ़ि-पानि
पेटे समेलै
गाम-घर-दलान
लाखक गेल जान

कोसी त्रासदी
विकराल निर्मम
तांडव नृत्य
महाकाल बनल
धोइ पोछि खेलक

लूटेरा सभ
मिलि माल खेलक
शोषण हत्या
नारीजनकेँ भेल
बच्चा दहए गेल

धनक क्षति
जनक मति गेल
देखैबला नै
डुमि मरल बच्चा
गाम भेल निपत्ता

प्रकृति कहि
चेतबैए लोककेँ
अचरज नै
प्रदूषित धरती
जहर उगलैए

देख प्रकृति
चेतावनी दइए
धरती पानि
हवा प्रदूषित भऽ
संकट छै जीवक

पावस रीतु
अमाबस राति छी
मेघ बरसै
बाढ़िमे डुमैत छी
के बँचेतै हमरा

मेघ बरसै
पुरबा झाँट बहै
गरैज कहै
आइ नहि अरवने
जलमग्न करब

झरझराति
जे झरनाक पानि
बहि कहैए
हिम्मत नै हारू
चलु लक्षक ओर

ठरल पानि
देहकेँ सिहराबै
झील झरना
सजि शोभा बढ़बै
जगत सुख पाबै

पानि बरैस
मेघ करै कल्याण
जीव रक्षा-ले
झील झरना नदी
भरि करै भण्डार

बिनु श्रम नै
जगतमे सजैए
समाज देश
खेतसँ खरिहाँन
सभकेँ राखै मान

इज्जतदार
ने इज्जत खोजैए
बेइमान तँ
बेच खाए गेल, जे
हुनका की कहबै?

अहिंसा छोड़ि
लोक हिंसा करैए
मानव गुण
जनु अन्त होइए
दानवे रूप मानु

हिंसा छोड़ि
अहिंसा अपनाऊ
अमन चैन
सुख शान्तिसँ जीबू
हेतै सभकेँ कल्याण

हिंसा छोड़ि कऽ
अहिंसा पथ चलु
हेतै कल्याण
लोक सुखी हेतै तँ
हेतै देश विकास

तियागी बनि
देशक सेवा करू
सर्वहितसँ
जनता खुश हेतै
गर्वित हेतै देश

बलिदानक
देश अछि भारत
माटि-पानि छै
उपजाऊ अमृत
कर्मवीरक स्थान

अपन हित
सुख सभ चाहैए
अनका लेल
काँट कीए रोपैए
कर्म छोड़ि चलैए

लोकक हित
कल्याण जे करैए
महामानव
जग जानि मानैए
देवतुल्य पूजैए

प्रेमक बान्ह
सभसँ मजगूत
लाख जमाना
नै मानैए तँए ने
लोक हिंसा करैए

स्वर्ग नरक
यएह धरती छी
सत्य पथकेँ
पकैड़ स्वर्ग मिले
कुपथसँ नरक

के सुधारत
एहि परम्पराकेँ
नै जनमल
तियागी ने इंसान
सुतल भगवान

चान सुरुज
समरूप सभक
बेवस्था किए
दू रंग बनल-ए
ऊँच-नीच देखैए

मरुस्थलमे
बरखा नै होइ छै
दृष्टिहीन नै
जग देख हँसै छै
के अमृत लूटै छै

शीशाक दिल
एक्के धक्का जँ जुटै
दुख सहैत
गरीब कठोर भऽ
पत्थर सन जे छै

पियास बुझै
पानिसँ, खूनसँ जे
त्रास मिटबे
की सत्य अहिंसासँ
मिटत ई पियास?

भ्रष्टाचारकेँ
जे सौरि उखारत
तेकरे नाम
अमर हेतै देश
पैर पूजतै लोक

बढ़ चौंसठ
एहेन घूसखोर
भ्रष्टाचारकेँ
जे पनाह दइ छै
की देशद्रोही नै छै

हाथो-हाथ जे
काज करि लोककेँ
हजार, लाख
ऑफिसमे मांगै छै
की भ्रष्टाचारी नै छै

उचित लेल
जे जान गमबै छै
सर्वहितक
कल्याण करैत छै
असली मसीहा छै

मान प्रतिष्ठा
सँ बढ़ि संसारमे
किछु नहि छै
कर्म, धैर्य, संतोख
जगत इजोत छै

मन मन्दिर
घर तीर्थ समान
माए-बापक
सेवासँ बढ़ि नै छै
जगमे कोनो काज

घूसखोरकेँ
की कोनो नाँगैर छै
इमान बेच
दुनियाँकेँ ठकै छै
के नरक भोगै छै?

भ्रमति मन
प्यासल मृगसन
सघन बोन
पानि बिनु तड़ैप
पटैक तेजै प्राण

मृग तृष्णामे
अज्ञानी वौआइए
भवलोकमे
घुमि तृष्णा बुझबे
नर्क भोग भोगैए

अपना लेल
दिन राति खटैए
सर्वहितक
काज नहि करैए
केना हेतै कल्याण

इमान घटि
लालच बढ़बैए
इंसान नहि
बेमान कहबैए
मरि नर्क भोगैए

मूर्खक वाणि
अग्निवाण होइए
ज्ञानीक वाणी
अमृत समान-ए
जगत कल्याणमे

देव समान
आदर मानदान
सभ खोजैए
बैस भोगी बनि कऽ
जग केना चलत?

जग अज्ञानी
देख ज्ञानी कनैए
ज्ञानक दीप
कहिया जरत जे
जग हेतै इजोत

सोच बदैल
समय-संग चलु
हेतै उत्थान
सभकेँ दियौ मौका
हेतै जग कल्याण

आइ तक जे
पछुआएल अछि
केना बढ़तै
करियौ ने उपाय
संग मिल चलैक

साथ मिल जा
समाज नै चलतै
केना हेतइ
समाजक विकास
जा बेवस्था नै हेतै

नियत जा नै
सभक सुधरतै
एक रंगक
समाज केना हेतै
जा दृष्टि दू रहतै

काजक बेर
पछुआएल रहै
खाइ बेरमे
कीए अगुआइ छै
की नियत ठीक छै?

सभक लेल
कानून अधिकार
एक रंगक
सुविधा-ले बनल
बेवहारमे दू छै

मुँह देख कऽ
मुंगबा परसै छै
मुँहदुब्बरकेँ
के जानि पुछै छइ
होइ छै मानहानि जे

केना बनतै
समतल सपाट
जाधैर नहि
उभर-खाभरकेँ
सहीट बनाएब

के सुधारत
दिशाहीन समाज
सुधारक छै
नेत्रहीन बनल
विवेक छै मरल

जे बनेलक
समाज दिशाहीन
माफी के देत
बिनु मौत मरत
पानि नै कियो देत

सभक सुख
छीन अपनेलक
से भोगी बनि
जगकेँ सतेलक
से नरक भोगत

जे छी दोखी से
माफी मांगि लेत तँ
क्षमा कऽ देतै
आब क्षमादान नै
मृत्युदण्ड भेटतै

दुखियाकेँ जे
जानि सतबै छइ
भगवानो नै
क्षमा देत ओकरा
दुख दबि मरै छै

पक्षी जकाँ छै
मनुखक जिनगी
पेट भरैले
परिवार छोड़ि कऽ
उड़ल फिरैत छै

पापी बनि कऽ
जे जिनगी जीअल
पापक भागी
दोसर के बनत
पाप ढोति मरत

देश अजादी
केकरा-ले भेटलै
गरीबकेँ तँ
भेटलै भूखमरी
तियागक फलमे

अजाद भेलै
केकरा लेल देश
बलिदानीकेँ
की भेटलै सनेस
गरीबी, घूसखोरी

देश गरीब
अमीर केतए-सँ
धन लूटैले
अकाससँ आबि कऽ
सत्ता हथियौलक

महगी मारि
बेरोजगारी संगे
भूखमरी आ
हत्या, अपहरण
उद्योगमे भेटल

अनेकतामे
एकता कहबी छै
सभ-सभसँ
मुदा किए छुबाए
तन-मन दुनूसँ?

देशक हाल
बड़ गड़बर छै
दलमलित
छै गरीबक दिल
महगीक मारिसँ

पेट कहिया
गरीबक भरतै
की जरि जेतै
ओकर अरमान
के करतै कल्याण

कहबी रटि
सभ पढ़ि कहै छै
सिद्धान्त सन
मुदा काजरूपमे
मोन पतियाबै छै

बाहर साफ
अन्दर घिनाएल
बिश्वासघात
कर्म, कुकर्म संगे
नहाइ गंगाघाट

फूल फड़क
थाहे ने, रोपैइए
ताड़क गाछ
जे बढ़ि पीए ताड़ी
तेकरे दिन भारी

डाइन कहि
महिला उत्पीड़न
ओझा-गुणीक
आरोप लगबैए
वैज्ञानिक युगमे

कोन कसूर
महिला केने अछि
जिनगी भरि
शोषणक शिकार
बनि सहि जीबैए

प्रेमक अर्थ
सभ नहि बुझैए
उनटा अर्थ
बुझि विष पीबैए
जानि बुझि मरैए

काँचक दिल
टुटि केना जुड़तै
प्रेमरससँ
सोना सन जुड़तै
नैन बीच बसतै

फूल बनि कऽ
गमगम करैत
सभक नैन
बसि दिल समेतै
गीत प्रेमक गेतै

आगि लगल
जगत जरइ छै
के मुझेतै ई
सौनक धधकैत
धधराकेँ यौ भाय?

सावन मास
बुलबुल चहकै
मेघ बरसै
पिया कहिया एतै
नयन तरसैए

धरतीक प्यास
सावन नै बुझेतै
मेघ बरैस
की करतै जखन
नयन बरसै छै

सुखल खेत
मेघ नै बरसल
नै भेल कादो
बितैए सौन भादो
बेवस्था छै बेकाबू

बरसातक
दिन आएल मुदा
झमकैआ तँ
नै बरसल मेघ
खेत केना रोपेतै

सभक हित
जे दिलसँ करतै
अमृतफल
जगतमे पाबतै
स्वर्ग किए खोजतै

पर सुख जे
छिन कऽ अपनेतै
नरक भोग
भोगि जीते मरतै
जग देख हँसतै

पानिक स्नान
तन शुद्ध करै छै
मन शुद्ध नै
सत्यकर्म ज्ञानसँ
मन शुद्ध होइ छै

तन शुद्ध तँ
सभ करै छै मुदा
मन नै कियो
जे शुद्ध दुनू करै
वएह महान छै

मधुर भाषा
कोइली बोल बोलै
कौआक भाषा
कोइली नहि सुनै
कौआ मारि भगाबै

निकटी तौल
सोना रत्न बिकै छै
नापि-तौल कऽ
चीज-वौस बिकै छै
बोली छै अनमोल

सुखक खान
धरती स्वर्ग सन
प्रदूषित भऽ
दुख सहि जीवकें
कल्याण करैत छै

भवलोकमे
लोक स्वर्ग खोजै छै
पृथ्वीसँ बढ़ि
नै छै तीनू लोकमे
साधनो छै उत्तम

कर्मयोगीकें
कर्ममे विश्वास छै
भोगवादीकें
रोगक चिन्ता होइ
से तियागी कहै छै

धनक शान
हाथी घोड़ा दलान
बागक शान
मोर-मोरनी नाच
तेकरो नाश तँ छै

मधुर फल
सभ खोजैत अछि
रोपै ने गाछ
बिनु पानि बुझेतै नै
तन मनक प्यास

भाग्य नै सुतै
सुतै छै कर्महीन
पौरुष जागि
कर्मवीर बनै छै
जगत पूजै छइ

विष पीब कऽ
पूरबामे सुतै छै
विधाता केना
ओकरा बँचेतै जे
दुनियाँकेँ देखतै

हिनभावसँ
मनोबल घटै छै
सम्पन्नतासँ
शत्रु, रोग भागै छै
दीन दुखे मरै छै

बाढ़िक पानि
धन-बल-यौवन
स्थायी नहि छै
सभ किछु छोड़ि कऽ
विद्या संगे जाइ छै

जीव जगत
बिनु जल केना कऽ
सजि जीयत
नैए आन उपाय
करू रक्षा जलकेँ

सावन-भादो
नदी उमरल छै
बाढ़ि पानिक
खतरा बढ़ल छै
गाम-धर डुमल

दीनक दुख
देनिहार बहुते
बँटनिहार
नै भेल आइ धरि
कियो नै छै इंसान

प्राणक रक्षा
केना करत लोक
जान मालक
नै छै कोनो सुरक्षा
केना बँचतै प्राण

बाढ़ि पानिक
समस्या देशक छै
केना निजात
मिलतै गरीबकेँ
डुमि मरै छै बाढ़ि

गामक गाम
दहि भँसिया गेल
नेना भुटका
बिलैट मरि गेल
बाढ़िक तांडवमे

बाढ़िक माया
नै कोनो दया-मया
धोइ पोछि कऽ
सभ किछु खेलक
निर्जन भेल गाम

दुख सहि कऽ
गरीब जीबैत छै
नै कियो बाँटै
दुखक पहाड़केँ
गरीबे माथ पड़ै

दीनक दुख
के बाँटि कऽ हरतै
सुख छोड़ि कऽ
आनक बलाए केँ
अपना माथ लेतै

माटि उखाड़ि
खेत जोते किसान
चौकी मारि कऽ
बीज बुनि सुतारि
उपजे धनसारि

खेती करैए
किसान मजदूर
माल मारैए
बनियाँ आ बेपारी
चिन्तामे छै दलाल

सरकारक
मौन चुप्पी देख कऽ
सभ जनता
बनल-ए लचार
महगीक शिकार

भूखल पेट
धियापुता कानैए
साँझ-विहान
महगी मारि सहि
सुते साँझे किसान

नै रोजगार
दुनू हाथ बेकाम
आँखिक नोर
बहैए धार सन
केना बँचत प्राण

रोटी कपड़ा
मकान शिक्षा स्वास्थ
कहबी सन
सभ करैए लूट
केना भेटत सुख

माल टलिया
मालदार बनल
देखकेँ लूटि
दलाल बनल-ए
भुखे मरैए दीन

चोरक माल
सरदारे बाँटैए
चोरक माथ
चढ़ि खेल देखैए
फाँसी चढ़ैए चोर

सुख दुखक
खेल खेलै खेलाड़ी
पुण्य लूटाए
शैतान अधिकारी
माल खाए मदारी

अपन दोष
गुणे-गुण देखैए
आनक दोष
वियादोसँ विषाह
चालैन दुसै सूप

सभ खोजै छै
सखुआ सागवान
बेल बगूर
कियो ने खोजै जानि
गम्हारि बीचमानि

सुखल डारि
कियो ने पकड़ैए
सभ खोजैए
हरियरका डारि
तइयो अछि हानि

फलक चिन्ता
करि सभ मरैए
कर्मक चिन्ता
कियो नहि करैए
फलामृत नै होय

बाट छोड़ि
बटोही भटकैए
आँखि रहितो
आन्हर बनल-ए
क्षणे प्राण गंबैए

मोह ममता
फँसि सभ मरैए
तैयो तँ लोक
भवलोक घुमैए
नर्क भोग भोगैए

समय छोड़ि
जे काज करैत छै
अपनाकेँ ओ
चतुर समझैए
ओझरीमे मरैए

हवा पानिकेँ
नै कोनो अछि डर
बिहाड़ि बाढ़ि
क्षणेमे बिगाड़ैए
लइए जानि प्राण

ठढ़िया साग
ठाढ़ बाड़ी रहैए
गेनहारी तँ
चतुर गिरथानि
पोरो धेने मचान

अण्डीक खुट्टा
बधण्डीक छै ठाठ
सण्ठीक टाट
मनेजरक खाट
एके धक्का दू फाँक

परबुधिया
बेटा जखने भेल
सभ संकट
तखने आबि गेल
बुधियो हरा गेल

परबुधिकेँ
नै चलु आगू-पाछू
मति-कुमति
तखने बनि जाएत
दुख घर आएत

सप्पत दै छी
राखू प्रेमक मान
नै तँ दऽ देब
अहाँक विरोगमे
हम अपन जान

झीसी झीसिया
फुहार पड़ै छइ
फूही फूहिया
थलकीचार बनि
भादो कादो होइए

समै मेघौन
सावन कहबैए
घनघनौआ
बर्खा भादो होइए
पानि बाढ़ि लाबैए

कसूर केलौं
खेतीहर बनलौं
शोक भेटल
गरीबीक संताप
छाती पीटि मरै छी

सुख-चौन जे
हाथसँ छुटि गेल
अपन काज
बेरोजगार भेने
होइ छी अपमान

काज छुटने
सोभिमान मरल
केना कहब
बेथा दुखक बात
केना जीएब आब

संकटमे छै
किसानक जिनगी
पुछनिहार
नै बँचल छै कियो
मुक्ति केना भेटतै

सभ विपदा
खेतीहर सहैए
केना चलतै
महगी मारि भारी
धूरी टुटल गाड़ी

मरितो क्षण
चिड़ै उपकारी छी
तइयो किए
लोक शिकार करि
संसार छोड़बै छी

पानि बहतै
पनिबटे ससैर
नै हेतै हानि
जँ बान्हबै बान्ह तँ
पानि करतै हानि

दीन दुखीकेँ
उपकार करियौ
हेतै कल्याण
मिलतै जीवन
काज हेतै महान्

खुशबू दैत
फूल हँसि कहैए
हम छी प्रेमी
प्रकृति जगतकेँ
प्रेमी बनु हमर

सूरत देख
जगत लुभाइए
सुगन्ध पाबि
हमरा हत्या करि
अत्याचार करैए

सुन्दरता छी
मात्र देखैक चीज
छुबैक नै छी
छुबै तँ प्रेमी नै छी
दिलकेँ दुखबै छी

अघोरकाल
महा विकराल-ए
बेटा-बापक
दुश्मन बनल-ए
देख जग कानैए

पूर्वाग्रहसँ
सभ ग्रसित अछि
दुटत केना
एहि बाटसँ मुक्ति
जड़िमे अन्धभक्ति

दूध फूल नै
छुबाइ छै किनको
जाति भेदसँ
तनमन किएक
पूर्वेसँ छुबाइए

कसूरदार
बहुत छै जगतमे
इमानदार
केकरा कहबै यौ
के चढ़तै फाँसी यौ

आपसी भेद
मतभेद बनि कऽ
भेदिया वेद
कुभेद पढ़ि-पढ़ि
समाजकेँ तोड़ैए

दिलक बात
नै केकरो कहियो
जानि करत
तखने नकीहानि
समैझ राखु मान

कूदैक चिड़ै
मधुर गीत गाबै
पंख पसारि
अकासमे उड़ै छै
दुख-सुख सहै छै

कोइली सुग्गा
मोर पपीहा गाबै
उपदेशक
बगुला भगत छै
मैना छै बजनियाँ

आएल सौन
उमैर गेल मेघ
नाचे मयूर
बेंग संगीत भरै
कोइली गाबै गीत

मेघ बरैस
धरतीकेँ सींचै छै
गरैज मेघ
किसानकेँ जगाबै
पानि संवारै चास

खेतीक काज
सभसँ उत्तम छै
बिनु साधन
बड़ दुखदायी छै
नै केने, नै बनै छै

पाँच महल
दस दरबाजा छै
पाँच मंत्री
दू चोर, दू सिपाही
काया बीच प्राण छै

घुमि देखलौं
अचरज दुलफी
छोटका झाड़
फूल ऊपर पत्ता
ज्वर करै निपत्ता।

भूख जगबै
पित्त नाश करै छै
दुलफी पत्ता
छोट उज्जर फूल
भेटै खेत उसर

लत्ती लतैर
बेधने रहै गाछ
एक्को नै पत्ता
अमरलत्ती कहि
दुनियाँ पुकारै छै

कठजीबी छै
लत्ती-अमरलत्ती
गुण भरल
औषध कहबै छै
परजीबी होइ छै

चर्म रोगक
असल दवाइ छै
अमरलत्ती
ज्योतिकेँ बढ़बै छै
खून साफ करै छै

यौवन पाबि
जानि नै इतराउ
चारि दिनक
चाँदनी राति औत
फेर अन्हार राति

प्रेम ने छीपै
दुनियाँ छीपबैसँ
प्यास नै बुझै
ओसकेँ चाटनेसँ
दिलमे बसै प्रेम

प्रेमक रस
सभ रससँ मीठ
के पीएत ई
सभ डुमल अछि
सोमरस पीबैमे

मन कहैए
अमृत पीब लेतौ
आनब केना
जे रस पीबि मीरा
मोक्ष धाम पौलक

रसक खान
दुनियाँमे छिपल
खोजैबलाकेँ
सभ दिन कमी छै
तेँ दुर्लभ कहै छै

पर्यटककेँ
अपार संभावना
मिथिलामे छै
स्थलक विकाससँ
खुशहाली आनत

मिथिला अछि
पौराणिक स्थलक
गाम, धामक
तीर्थ स्थल अरवनो
कर्मभूमि सेहो छी

कर्मभूमिसँ
बढ़ि नै स्वर्ग भूमि
हमरा चाही
कर्मभूमि आ रणभूमि,
नै चाही स्वर्गभूमि

इतिहास छै
मिथिलाक पुराण
पवित्र धाम
स्वर्गसन धरती
देवो करैए मान

जग जानैए
मिथिला धरतीकेँ
हवा पानि तँ
अमृत सन अछि
राखै जगमे मान

अमृत पानि
नदी झरना बहि
मिथिला गाम
सुखक खान अछि
अन्न, फलक भूमि

बाँटि देलक
मिथिला समाजकेँ
किछु सामन्ती
अपन स्वार्थ लेल
मुदा माफी के देतै

समाज मिलि
दहेज कैंसरकेँ
मारि भगाउ
मानवताकेँ राखू
सभक हेतै हित

दहेज छीऐ
समाजक कलंक
केना मिटत
ई दानव-दहेज
की नारी छी कलंक

केना भागत
दहेजक कुलीला
लालची लोक
करैए कठखेल
जे मरैए महिला

घृणित काज
समाजमे होइए
अपमानित
नारी हत्या होइए
केना चलत सृष्टि?

छूआ-छूत छै
समाजक समस्या
केना मिटत
संक्रमणक रोग
की छीऐ मनरोग

शुद्ध मने नै
सड़ैन पकड़ने
जड़ियाएल-ए
दिल बेमान सेहो
तेँ करैए अन्याय

छूतहा रोग
किछु लोककेँ धेने
सभटा सुख
हमरेटा भेटए
बाँकी भाँड़मे जाए

असंतोष-ए
मनुखमे घुसल
कहिया हेतै
ई रोगक निदान
जे हेतै सर्वहित

भेद रचि कऽ
समाज बाँटि काटि
अपना लेल
बेसी सुख चाहैए
दुख दर्द के लेतै?

निमन फड़
लइले मारि करै
सड़लहाकेँ
के लेतै जानि मानि
केकरो हेतै हानि

माफ करियौ
कहल सुनलकेँ
सुखक खान
बिनु कर्म नै भेटै
कालक पहरा छै

योद्धा मारैए
तीरसँ, ज्ञानी मारै
ज्ञान सम्मान
मूर्ख मारै शूलसँ
जे जाने से चतुर

बिनु दागल
केना पहचानत
सभ छै ज्ञानी
नै छै कोइ अज्ञानी
तैँ छै ई किरदानी

मूर्ख रहितो
महामूर्खकेँ खोजे
सभ भेटैए
ज्ञानी, संत, विद्वान
पढ़ै वेद पुराण

सोचि करू जे
सर्वहितक हेतै
वदनाम छै
त्यागी, संयासी सन्त
जे छिपाएल नै छै

किछु लोकक
काज बदनाम छै
जग जानै छै
बौक आन्हर बनि
मूर्ति जकाँ देखै छै

संकीर्ण सोच
शैतानक होइए
कपटी दिल
बेमानक होइए
संतक दिल साफ

पढ़ल ज्ञानी
अनपढ़ अज्ञानी
के छै अंजान
जे ठकि कऽ खाइए
से चतुर सियान

ठककेँ ठकि
खाइमे नैए हानि
सभ चतुर
अपनाकेँ बुझैए
तइयो ठकाइए

ठककेँ लोक
ठकहरबा कहि
दस लोकमे
बदनाम करैए
दागीकेँ की कहबै

जे आइ धरि
किछु नहि केलक
करैबलाकेँ
दुखे-दुख देलक
माल चापि खेलक

जोंक बनि जे
जानि खून पीलक
दुख देलक
दीनकेँ सतेलक
केना मुँह देखेतै

कर जोड़ि कऽ
विनती जे केलक
तेकरे दुख
दागी मिलि देलक
के तियागी कहेतै?

मरलहाकेँ
मारि दागी बनल
साधु बनि कऽ
जगकेँ ठकलक
इंसाफी के कहेतै?

अन्याय भेल
समाज टुटि गेल
केना जुड़त
बनत सर्वहित
की हेतै अनरीत

जे जेना भेल
आबो तँ रहु मिलि
सभक हित
जन कल्याण हेतै
नव समाज एतै

पानि रंग
जेना समाज हेतै
भेदभव नै
नव विचार संगे
सभ गर्वसँ जीतै

एक मनुख
एके रंग लहू छै
एक प्रकृति
एके रंग सृष्टि छै
भेद भाव कीए छै?

अवगुणकेँ
तियाग करू जानि
जेना करैए
हंस पानि तियाग
ई छी ज्ञानीक वाणि

रूप कुरूप
सँ नै छै कोनो हानि
गुण उत्तम
सर्वहित समान
से पाबै ऊँच स्थान

बच्चा बेदरू
भगवानक रूप
प्रेम भूखल
भेद भाव नै जाने
सभक प्रेमी अछि

घृणित काज
अधर्मी ने करैए
उत्तम काज
दयावान करैए
सर्वहितक दान

आगि जराए
जंगलकेँ बनबै
छै, सुनसान
चिंता पहुँचाबै-ए
अर्थीपर श्मशान

साँझक समे
उदासी रहै मन
देह गरम
कठोर परिश्रम
डुमल छेलौं गम

प्रशंसनीय
मैथिली रंगमंच
दिशाहीन भऽ
रणक्षेत्र छोड़ि कऽ
उगडुम भऽ गेल

यात्रा क्रममे
हाट बजार देख
मनमे भेल
चुप्पे किछु कीनली
देख महगी गुप्पे

बेरोजगार
महगी मारि खाए
दुनू साँझक
रोटीक जोगारमे
बेमार पड़ि गेल

पेटक प्रश्न
जटिल बनल-ए
मजदूरकेँ
रोजगारक चिंता
खोजे स्वरोजगार

बोनिहारकेँ
नै छै खेत पथार
तेँ छै लचार
पेट केना भरतै
नहि छै रोजगार

गरीबसँ छै
सरकार बेमुख
दुखे दुख छै
गामक महाजन
ऋृण खुआ मारै छै

ऋृण खाए कऽ
गरीब जनमै छै
ऋृणे मरै छै
धिया-पुताक लेल
ऋृणे छोड़ि जाइ छै

उधार पैंच
गाम समाजमे छै
शहरमे तँ
नगदीए चलै छै
तेँ गाम उत्तम छै

सुखक खान
गामक जिनगी छै
शहरक तँ
बनल छै विधान
बाटे पर मरै छै

अन्न पानि-ले
गामक मजदूर
नहि मरै छै
स्वरोजगार लेल
दिन-राति झखै छै

रोजी-रोटीक
समस्या बनल छै
लचार बनि
अपन लेहू बेचि
धिया-पुता पालै छै

अनकर जे
हक मारि खेलक
सुखक भोग
दुनियाँ भोगलक
से तँ नर्क भोगत।

धरम छोड़ि
अधर्म जे केलक
सभकेँ ठकि
दुनियाँ ठकलक
मुँह केना देखौत

भोगी रोगक
इलाज नै होइ छै
मन बुझैले
उपचार करै छै
मनरोग रहै छै

रोगीक दुख
दुखिया जनै छै
जे रोग सहि
जगमे जीबइ छै
देख आन हँसै छै

आम लताम
मिथिलामे प्रधान
अनार, जौम
रक्त वर्द्धक अछि
अनरनेबा प्राण

मन रोगक
इलाज केना हेतै
अधक्की बनि
सभकेँ लूटि-लूटि
संतोषी कहबै छै

सभ रोगसँ
मनरोग भारी छै
एकर नहि
छै कोनो उपचार
चिंताक छै शिकार

अँवला नेबो
अमृत समान छी
नीम दबाइ
आम अनरनेबा
पेटक राखै मान

पेटक रोग
गुलैर भगबै छै
आँव पित्तकेँ
ठीकसँ पचबै छै
शक्तिकेँ बढ़बै छै

शोगसँ रोग
शोगए रोगी बनि
भोग उठल
भाग्य हारि सुतल
दुनियाँसँ रूसल

फूल नै होय
गुल्लैर मासे फड़ै
पकि झड़ै छै
दबाइ अमृत छै
खाए पेट भरै छै

जामुन छाल
ओ पात, फड़, बीआ
मधुमेहक
अमृत दबाइ छी
पौध गुणकारी छी

धारक धारा
पकैड़ ज्ञानीजन
जग कल्याण
नव युग निर्माण
करैत जीबै छैथ

ऊपरकासँ
पैघ धन नै अछि
प्रेमसँ बढ़ि
कोनो सुख नै अछि
सभकेँ जरूरी छै

अनमोल छै
मनुखक जिनगी
जँ उपकारी
बनि सेवा करए
मीठ फल पाबत

कारण की छी
नारी हत्या होइए
बदनामी तँ
पुरुख सहैत-ए
की यएह सत्य छी?

अपन माए
बहिन, पत्नी देवी
अनकर छी
कुलक्षणी, डाकनी
नीति की कहैत छै

प्रेमक बाट
पकड़ैए विद्वान
मधुर वाणि
बोलि रस बँटैए
जैसँ जग कल्याण

फूल बनि कऽ
गमकैँ चहुओर
दिलक दर्द
हरि मन जीतैए
सर्वहित करैए

जन कल्याण
सेवा अछि महान
उत्तम दान
विद्यादान होइए
श्रेष्ठ फल पबैए

एक नारीकेँ
दू नजैरसँ देखै
की देखैबला
दू रंगक होइए
अन्ध बनि देखैए

सभ नरकेँ
नै छै सम विचार
तँइ बहै छै
जगमे खूनक धार
बढ़ै छै अत्याचार

गामक दशा
जा नहि सुधरतै
गरीब केना
खुशहाल बनतै
की देख सुधरतै?

गरीबक छै
समस्या पैघ भारी
लचार बनि
हाथ जोड़ि बैसल
दुख सहि जीबै छै

मजदूरकेँ
जा रोजगार नहि
मिलतै ता नै
देश विकास हेतै
संकट बढ़ि जेतै

बाढ़ि पानिक
संकटे टा नहि छै
रौदी समस्या
गंभीर बनल छै
मुक्ति केना भेटतै?

कृषि योजना
बेकाम पड़ल छै
गरीबी केना
देशसँ दूर हेतै
भूखे लोक मरतै

पैघ समस्या
देशक जनसंख्या
रोजगारक
समस्या छै गंभीर
क्रान्तिक रूप लेतै

सरकार छै
बेवस्थामे हुसल
जनता अछि
संकटमे फँसल
दुखकेँ के हरतै?

सुधरलकेँ
सभ बिगाड़ै छइ
बिगड़लकेँ
सुधारै नै छै कियो
सभक सिर विषेतै

कालाबजारी
जाधैर नै रूकतै
महगी बढ़ि
अकास चढ़ि जेतै
के रोकतै एकरा?

देशक माल
विदेशमे भेजैए
महग माल
बेपारी दाबि रखि
जनताकेँ लूटैए

भ्रष्टाचारक
जन्मदाता ऊँचका
पालनकर्त्ता
सेहो तँ जनता
मुक्ति केना भेटतै

वृक्षारोपन
वन संरक्षणकेँ
बढ़ाबा दियौ
प्रदूषण घटत
जीव जन्तु बँचत

प्रदूषण छै
जगतक समस्या
केना घटतै
जा मनुखक कर्म
सद्कर्म नै हेतै

मनुख द्वारा
सृजल कुकर्म जा
नै बदलतै
ताधैर प्रदूषण
विष बनि सतेतै

प्रदूषणक
कारण जनसंख्या
जा नियंत्रण
नहि हेतै ताधैर
दुख सहे पड़तै

प्रदूषणक
निवारण नै हेतै
ता जलवायु
परिवर्त्तन हेतै
कुप्रभाव बढ़तै

धरती, वायु
जल प्रदूषित छै
वायुमण्डल
विषक समान छै
केना मुक्ति मिलतै?

हल्लुक माटि
बिलाइ खुनि कूदै
मोछ टेर कऽ
छालही घुमि खाए
साधु सन्त कहए

मूसक माटि
पर मुसरी नाचै
बिलाइ देख
बिल घुसि दुबैक
टाल ठोकि सुतए

दलालक तँ
घोड़ो बिकाइ छइ
कुकुर कहीं
आगि झड़कै छै
कौआ सन्त होइ छै

खेल खेलाड़ी
नचनियाँ अनाड़ी
घोड़ा सवारी
नदीकातक बाड़ी
नै अछि अख्तियारी

बैसले लोक
अमृत खोजैए
तँए जिनगी
निर्धिन घिनाइए
नर्के स्वर्ग बुझैए

सम्प्रदायकेँ
धर्म बुझि मनुख
कर्म बदैल
समाजकेँ तोड़ैए
स्वार्थ सिद्ध करैए

पाखण्डी रस्ता
पकैड़ आडम्बरी
भेदिया भेद
विषवाण छोड़ैए
क्षणे प्राण लइए

देश, समाज
सम्प्रदाय तोड़ैए
जातिक भेद
पाखण्डी बनबैए
जानि हानि करैए

खूनी हत्यारा
लोक किए बनैए
मानव प्रेम
भूलि खून पीबैए
धर्मी कहि जीबैए

हल्लुक काज
सभ खोजि करैए
हलुआ खाए
भैरवियो गाबैए
जग देख हँसैए

राजभाषाक
दर्जा देबाक मांग
मिथिलावासी
अदौसँ करैत-ए
सुनै नै सरकार

अपन भाषा
मैथिली जनभाषा
अपन राज्य
मिथिला छी महान
अछि स्वर्ग समान

मिथिलाक छी
मैथिली जनभाषा
राजभाषाक
दर्जा कहिया हेतै
पढ़तै धियापुता

अनरनेबा
उत्तम फड़ भारी
भूख जगबै
गैस, पित्त, कब्जकेँ
समाप्त करै छइ

बेरोजगारी
दिन दिन बढ़त
कम उद्योग
काज करत यंत्र
बनु स्वरोजगारी

कुकर्मी भारी
सुकर्मी हल्लुक-ए
जानमालक
खतरा बढ़ल-ए
कानून की करैए

चोरी उठल
डकैती बढ़ल-ए
अपहरण
हत्याक उद्योग तँ
विकसित भेल-ए

जखने भेल
कुपुत्र खंदानमे
मान सम्मान
पानिमे चलि गेल
स्वर्ग नर्क भऽ गेल

ओसक कण
घासपर पड़ल
मोती बनि कऽ
धरती सजि गेल
भोर आनन्द भेल

अकास रंग
सभ रंगसँ नीक
मनक रंग
सतरंग नहाए
बाँकी निधि समाए

ज्ञानक सुख
अमृत सागर छी
भौतिक सुख
क्षणिक नाश्वर छी
तैले कीए मरै छी

खिलल फूल
हँसि मालिकेँ कहै
नै बनु स्वार्थी
जग छै मतलबी
के करत इंसाफ?

मान सम्मान
लेल सभ मरैए
के अछि दोषी
विचार के करत
जे अछि खुद दोषी

मजदूरक
देह नै दुखाइ छै
बैसलहाकेँ
देह दुखि रोगी छै
के करत दवाइ

जे सभ दिन
खेलकै चाटि चाटि
मलाइयेटा
सुखल केना खेतै
कण्ठ फँसि मरतै

माल मारि कऽ
जे सभ खेलक-ए
साधु बनि कऽ
धोखा दैत रहल
से तँ नर्क भोगत

बैसले खेतै
रोपतै बगूरो ने
आम केना कऽ
सभ दिन खाएत
धेने रहत खाट

सबलताकेँ
पूजा सभ करै छै
निर्वल जानि
बकरी बलि चढ़ै
देवीक भोग लगै

शिकारी करै
हरिणक शिकार
शेर करै छै
शिकारीक शिकार
की ई छी अत्याचार

डाकूसँ साधु
भोगीसँ जोगी बनि
बौआइत छै
कर्म छोड़ि जगकेँ
ठक बनि ठकै छै

उसैर गेल
मिथिलाक रिवाज
डोली, कहार
डम्फा, बौसली, नाच
संगे रसनचौकी

पतन भेल
वियाहक चलैन
विदा होइए
मोटर साइकिल
केना देखब डोली?

बिनु लगने
बियाहक चलैन
राति बिआह
भोरे तलाक होइ
महफ्फा कीए औत?

अपन चालि
छोड़ि बन्दर नाचै
वर-कनियाँ
मीठक जड़ि खेतै
बरियाती की हेतै?

नीक होइत
कनियाँ छोड़ि लोक
दहेज संगे
बियाह करैत तँ
जनसंख्या कमतै

पढ़ि लिखि कऽ
लोक बनराएल
पथ कुपथ
पकैड़ चलै छइ
श्रम चोरी करैए

दीनक दुख
पात-फूल सन छै
अमीरक छै
पहाड़ सन दुख
कर्मे फल मिलै छै

अमानवीय
सोच नक्सलवाद
खूनी हत्यारा
आतंकवादी बनि
शोक संताष दिए

वंशवाद आ
परिवारवादसँ
समाजवाद
खतरामे पड़ल
लोकतंत्र मरल

अपन दही
सौजबी मीठ कहै
अनकर तँ
छै चुन्ने सन खट्टा
अछियो घोरे मट्ठा

उत्तम खेती
नौकरी छी छोटहा
स्वर्गक दुख
गामक जिनगी  छी
प्रमाणो अछि पक्का

जखने पुत्र
परदेसिया भेल
देव पित्तर
सेहो उजैर गेल
संस्कार हीन भेल

हल्लुक माटि
मुसरी खोदहै छै
खेतक माटि
जे खौदि उपजाबै
वएह दुख पाबै

टटका पानि
भोरेमे करू स्नान
दही चूराक
चलपान हुए तँ
शरीरक कल्याण

सुडौल देह
व्यायाम बनबै छै
स्वस्थ दिमाग
फूर्ति तनदुर्स्तीक
संगे आयु बढ़ै छै

निरोग तन
मन अति प्रसन्न
दिल दिमाग
स्वस्थ सभ अंग
काजमे लगै मन

सभक लेल
खेल-कूद जरूरी
साधनहिन
केना खेलत खेल
बेवस्था छै फेल

खेल-कूदमे
छै बड़-बड़ भेद
महग खेल
अमीर सभ खेलै
मंगनी खेलै दीन

खेल खेलमे
धिया-पुताक मेल
भेद भाव नै
करवनौं झगड़ा तँ
लगले करै मेल

कसरतसँ
शरीर बलगर
मन प्रसन्न
खून संचार कमि
राखैत-ए निरोग

व्यायाम राखै
शरीरकें निरोग
बल बढ़ए
भूख, रूचि जगबै
फूर्ति राखै शरीर

कब्बडी खेल
गरीबक खेल छी
नै कोनो खर्चा
सभ मौसम खेलु
अछि मनोरंजक

केरा, लताम
बारहो मास फड़ै
गुण भरल
गरीबक छी फल
बड़ ललीचगर

जातिक भेद
अंधविश्वास अछि
आडम्बरसँ
समाज ओझराए
दिशाहिन बनैए

पूजा-पाठ आ
हरि नामक जाप
दिखाबा नहि
तनमन अर्पण
ईश्वारमे रमण

आँखि बचाउ
रौद, गर्दा धुआँसँ
साफ राखि कऽ
देखू दुनियाँदारी
रत्न छी अनमोल

दाँतकेँ करू
दतमैनसँ साफ
नीम, साहुर
बगूर छै उत्तम
दाँत राखै निरोग

खैनी बीड़ीसँ
करियो परहेज
मुँह, दाँतक
नहि हएत रोग
रहत मन प्रसन्न

गाजर मुड़ै
सागसँ करू मेल
ज्योति बढ़त
कब्ज दूर करत
रोग नहि छूबत

साफ सफाइ
पर दियौ धियान
मुक्ति मिलत
रोगक जीवाणुसँ
प्रदूषण घटत

टमाटरमे
गुण भरल अछि
नित्य खाइसँ
रूचिकेँ जगबैए
रोगकेँ भगबैए

साँझ विहान
गामक दलानमे
बैसार करू
सभक बात सुनि
करू हितक काज

अखन नैए
गामक दलानमे
विचार लेल
बुजुर्गक बेवस्था
केना हेतै विकास

माफ करबै
कहल सुनलकैं
नैए वैरागी
दुनियाँ छै तियागी
के करत विश्वास?

मोफत माल
सभ कियो खोजैए
परिश्रमसँ
किए लोक डरैए
जे भोगी बनल-ए

भोगी कहैए
जेगी छी हम सभ
कर्मक चूक
भेने पाप करै छी
लोभ फँसि मरै छी

वीर बिनु नै
जगत चलै छइ
कर्मक मान
सदिखन मिलै छै
कर्मसँ मिलै स्थान

बानर चलि
मदारी पकड़ै
चिड़ैक चालि
शिकारी पकड़ैए
कर्म भटैक मरै

सागो खाए कऽ
बनी विद्वान तँ
ऊँच आसन
सदकर्म बितत
जिनगी तँ आनन्द

सत्य काज तँ
नै अछि कोनो चिन्ता
नहि बनाउ
यात्रा पत्तरा देख
अंजाम माफे-माफ

नेक इंसान
सदिखन पूजाए
धरती मानै
अपन पुत्र सन
जगमे होय नाम

जिनगी-शत्रु
मोह, लोभ, क्रोध छी
संगमे रहि
जिनगी बिगाड़ैए
क्रोध जीते जारैए

मनक मोह
मायामे फँसबैए
श्रमदान तँ
कर्मकेँ बढ़बैए
विद्या बढ़बै यश

ईमान धर्म
इंसानक बाट छी
उत्तम कर्म
जिनगीक साधन
सेवा कर्म श्रृंगार

दूधमे पानि
कहबैए तँ दूधे
काजसँ जाति
धोखा खाए बदली
मुँह रंगि चलैए

दुर्जन मरै
कफनो नहि मिलै
साधु, सजान
दूध मेबा पबैए
कौआ हंस नै होइ

चोरक शत्रु
महाचोर होइ छै
सही इंसान
सज्जनकेँ शत्रु नै
पैघ शत्रु छी धन

अहिंसा मार्ग
विश्व पकैड़ चलै
कल्याण हेतु
पाछूसँ आगू बढ़ि
शान्ति खोजि जीबैए

गड़बड़ी छै
देशक बेवस्थामे
हिनभावसँ
दोसरकेँ देखै छै
असंतोषे जीबै छै

ऊँच नीचक
दूरी बढ़ि रहल
जा धरि नहि
समानता हएत
नै हएत विकास

अपन सुख
बैसले खोजैए
दोसरकेँ तँ
खाधिमे गिरबैए
उन्टे नोर बहबै

सभ एके छी
मनुखक बेवस्था
किए ने एक
केकरो छै घी, मेवा
कियो मरै रोटी-ले

कियो मरैए
कोठा, नौलखा लेल
कियो लूटैए
सोना हीराक खान
खोपरी केकरा-ले?

तियागी नहि
नाओं कमबै लेल
करैए खेल
स्वार्थ सिद्धि लेल तँ
फल खोजेए मधुर

कर्मक चूक
रणसँ पराएल
मृत्यु समान
जिनगी अकारथ
भेटै नै दूजा तन

मान सम्मान
सभक छै समान
बेवस्था किए
विषम बनि-बनि
ऊँच नीच करैए

केना कहब
दुख सुखक बात
देश चलैए
उनटे बिनु बाट
दागीकेँ अछि धाक

सभ साधु तँ
चोर केतए गेल
चालि बदैल
परमोशन भेल
चोरसँ डाकू भेल

खान पानमे
संतुलित अहार
नित्य व्ययाम
भोरक स्नान सेहो
रोगक निदान छी

खेल कूद आ
व्यायाम शरीरक
रक्त संचार
करैए संतुलित
दूध अमृत पान

फल मेवा तँ
शक्तिवर्द्धक अछि
साग पातसँ
नेत्रक ज्योति बढ़ैए
दूध पूर्ण अहार

साग पतार
शरीरक रक्षक
आँखिक ज्योति
आँतक बेमारीकेँ
रखबारि करैए

गरीबक छी
अड़िकंचन साग
उत्तम स्वाद
खाइले ललचैए
पैचियो लगबैए

गेन्हारी साग
बड़ गुण्कारी-ए
उत्तम साग
रोगी भोगी खाइए
सभ दिन भेटैए

पटुआ पोरो
सागकेँ के पुछैए
घौका साग तँ
महग बिकाइए
सभ मिलि खाइए

सभ गुण छै
बथुआ सागमे
सेरसो साग
श्रेष्ठ सुआदी बनि
सभक दिल बसै

करमी साग
थाल पानि उपजै
चौड़ चाँचर
लतैड़ चतैड़ कऽ
ओर अन्त नै लगै

जाड़क मास
सुआ मेथीक साग
अल्लू चटनी
नयका चाउरक
भात-ले तरसै छी

गर्मी समय
सरहंची साग आ
नोनियाँ संगे
पुदीनाक चटनी
हितकारी होइए

अमरलत्ती
नै पत्ता फूल फड़
पानक लत्ती
पत्ता चतैर
दुनू गुणकारी छै

साँझ देखियौ
दीयाबाती तेलकेँ
तीनू मिलि कऽ
जग इजोत करि
जन कल्याण करै

बिनु प्रेमक
जग सुन्ना लगै छै
तेल बिनु नै
दियाबाती जरै छै
प्रेमी देख तरसै

दोस्तीमे कुश्ती
दुश्मनसँ जँ मेल
जे करै छइ
जानि बुझि झमेल
जिनगीमे नै चैन

सभ खुश तँ
जगत खुश अछि
यएह तँ छी
पैघ शुभकामना
पूर्ण मनोकामना

थालमे गैंची
लत्ती अमरलत्ती
बड़ चतुर
नागफेनीक काँट
कठजीव होइए

बाड़ी झाड़ीमे
सेवसन लताम
अमृत फल
गरीबो खाइए
मंगनी फलदान

आँखिक नोर
बरखा बून जकाँ
टपैक गिरै
दिलमे टीस मारै
के बाँटत ई दुख?

महगी मारि
सभ सहि मरैए
लूटेरा बनि
अधिकारी बेपारी
गरीबकेँ मारैए

बेदागी पर
दागी भाड़ी पड़ल
देशक सत्ता
गिद्ध कौआ हाथमे
दीनहीन मरैए

घी मे तरलु
करैलाकेँ तइयो
हएत तीते
जड़ि खाऊ की छीप
ईख लगत मीठे

कुकुर कहीं
आगि पकै छै, ठक
कहीं उपास
नंगटा नँगे नाचे
के करत विचार

अपन चालि
छोड़ि कुकुर चालि
किए चलै छी
आँखिमे पट्टी बान्हि
जग किए देखै छी

जगक सुख
कर्महीन लेल नै
तियागी लेल
सुख क्षीर सागर
सत्य कर्म प्रधान

बिनु श्रमक
श्रम नहि होइए
बिनु श्रम नै
धरती उपजैए
मोफतमे नै सोना

असल सुख
श्रमिककेँ मिलैए
परिश्रमसँ
जिनगी चलबैए
दुखे सुख बुझैए

नसीबमे नै
दुनू साँझक अन्न
कपड़ा नैए
झाँपितौं पूर्ण अंग
सुतैले नहि घर

बाट ससैर
बटोही चलैए
पानि ससैर
नव गति पाबैए
छी जिनगीक गति

चान छिटैक
पसारै इजोरिया
प्रेम उमैर
लुकछिप खेलैए
बदरी संगे चान

चानन वृक्ष
कूहकै कोयलिया
ओसक कण
देख तृष्णा नै मिटै
नेनसँ बहै नोर

सभ नम्हर
छोट कहै नै कोइ
जे करै छोट
अहित कम मुदा
सभक हित होइ

काज लेल नै
नाओं लेल नम्हर
जीबै मरैए
पत्थर पट्ट पर
नाओं खोदबै लेल

सत्य छोड़ि कऽ
इंसान नै चलैए
देह छोड़ि नै
लहू प्राण रहैए
जेना नभमे सूर्ज

बरखा बून
सुखल धरतीकेँ
नभसँ आबि
बुझबैए पियास
सजे लगैए खेत

बाँस आ वंश
समरूप होइए
जीवितो संग
मरितो संग रहि
संगे संग जरैए

वंशीक स्वर
सभकेँ मन मोहै
अमृत सुर
रसपान कराबै

संगीत सजि
सुरताल बढ़ाबै
रागतालसँ
जगत सुख पाबै
रोगीक रोग भागै

राग भरि कऽ
मल्हाड़ सुर गाबै
ताल ठोकि कऽ
बजबे ढोलकिया
प्रेमी छै सुनबैया

मृदंग बाजै
धा धीप धा धीप धा
तबला बाजै
ती ती ना धी ना धी-ना
गुमकै गुमगुमियाँ

संगीत स्वर
साजे हरमुनियाँ
आठ स्वरसँ
जगबैए दुनियाँ
नाचैए नचनियाँ

भोगी जोगीमे
बहुत भेद होइए
एक बिलासी
दोसर कर्मवादी
बिचला सुखदायी

मरूआ रोटी
नून तेल मिर्चाय
नोनीक साग
पियौज खटाइक
संगे खाइए भोगी

चाउर चूरा
बासमती धानक
बड़ सुन्नर
जे ई उपजाबैए
सेहे स्वाद पाबैए

नाक बिनु नै
शोभै छइ मुखड़ा
दाँत बिनु नै
मुँह शोभैत अछि
आँखि बिनु नै जग

राति बिनु नै
तरेगन शोभैए
सुरुज बिनु
दिन नै शोभै छइ
पानि बिनु नै जीव

पानि बिनु जे
माछ तड़ैप मरै
शोनीत बिनु
जीव जन्तु मरैए
दूध बिनु चिलका

कर्महीनक
काज उल्टे होइए
सम्प्रादायकेँ
धरम बुझै छइ
दीप ज्योतिकेँ अंध

घास खाए कऽ
गाए दूध दइए
उपकारक
बाटपर बटोही
अजीवन चलैए

विकास देख
मनुख मनुखसँ
जरि मरैए
सभहक हित नै
स्वार्थ लेल जीबैए

साँझ पहर
फतिंगा उड़ै छइ
दीप जरिते
सभ उड़ि अबैए
जरि-जरि मरैए

नरक भोग
भोगैत छै नरकी
जोगीसँ भोगी
सुख छीन भागै छै
स्वर्ग जाइ खातिर

हवा बहै छै
पूरबा आ पछिया
मेघ पहुँच
पानि बरसाबै छै
धरती उपजै छै

प्रसिद्धी लेल
सभ मरैत अछि
इज्जत लेल
कियो-कियो मरैए
स्वार्थ लेल जीबैए

राम नामक
नदीमे कोइ कोइ
नहाइ छइ
अहित केकरो ने
सभक हीत लेल

सुख सीमाक
अन्त होइ छै मुदा
दुखक अन्त
कहियो ने होइ छै
दुखे सुख होइ छै

बाह रे देह
तोहर कोन कोन
गति होइए
मन घेरल अछि
तन घिनाएल

जेकर तन
दोसरसँ छुबाइ
से छुतहर
किए ने कहाइए
से घरहर केना?

खाइ लेल नै
जीबइ लेल खाउ
अपन पेट
कुकुरो पोषैए
कर्महीन किए ने

मनक शान्ति
सभसँ उत्तम छै
सुखक खान
संतोखसँ भेटै छै
धर्म हित लेल छै

भाषाक रक्षा
सभक कर्म धर्म
बिनु भाषा नै
कोनो काज होइ छै
सभकेँ जरूरी छै

छूआ छूतसँ
भेद भव बढ़ै छै
समाज टुटि
कमजोर बनै छै
हानि छोड़ि लाभ नै

जातिवादसँ
प्रेम घटैत अछि
विकास कम
विवाद बढ़ि गेल
लाभ नै हानि भेल

पानि पेट्रोल
बँचाउ आगू लेल
केना जीअब
धनसँ बेसी मान
जीब जन्तु लेल छै

महुआ गाछ
फुलाइते गमकै
रस टपकै
मधुमाछी लुबैध
अमृत मधु दइ

अनरनेबा
जे सभ दिन खाए
अमृत फल
रोगक निवारण
काया करै कंचन

जारैन जरि
उपकर करैए
सभक लेल
उपयोगी होइए
भेद नहि बुझैए

भेद कुभेद
प्रकृति नै जानैए
जीव जीवकेँ
मतभेद करैए
देख ज्ञानी हँसैए

गरम रौद
तपि घरा जरैए
प्यास कहिया
मेटत, से मरै छी
नै घास उघारे छी

मेघ देख कऽ
किसान हुलसैए
बरखा बून
गिरि धरती जागि
अंकूर लऽ बढ़ैए

हर्षित मने
किसान खेत जोतै
बीआ उपारि
धनरोपनी करि
अन्नसँ कोठी भरै

देशक मान
किसान बढ़बैए
सभक हित
श्रमदान करि कऽ
अन्नदान करैए

अन्न बिनु नै
जिनगी चलतै तँ
खेती किए ने
सभ मिलि करतै
हेतै विकास काज

जन काटैए
झाड़ी वन पर्वत
बनबे मार्ग
सुगम लोकहित
तइयो उपेक्षित

गरीबजन
महाजन दबंग
केना जीअब
समाज संगे संग
देखैए दू नजैर

अपन घर
टुटलो मरैइया
सुखक खान
अनकर महल
नै दिए कोनो काम

बाबाक सुग्गा
मीठ फल ने खाए
लाल मिर्चाइ
लेल रूसि रहए
केना भक्ति हएत

जे जनमैए
एक दिन मरैए
बाट भटैक
रणक्षेत्र छोड़ैए
केना जीतत जंग

हित अहित
सभसँ होइ छइ
सभक हित
साहित्यमे होइए
से जगत जानैए

जाल फँसि
जेना माछ मरैए
शब्दजालमे
तहिना साहित्य
मरि काल बनैए

तनक संग
करू मनकेँ साफ
हित अहित
देख कऽ चलु बाट
नहि लागत दाग

उथर धार
रहि रहि उधिया
गहींर धार
चुप्पे चलैए चालि
कहियो ने सुखाए

हँसैत फूल
देख भैंरा कहए
नित्य रहब
दुख सुखक संग
मन करू प्रसन्न

बात सुनि कऽ
फूल भेल प्रसन्न
झूला झुलब
पवन संगे संग
रहब उपवन

रहब वन
पीअब मकरन्द
मधुर रस
डुमल अंग अंग
सुख दुखक संग

स्वर्ग मिथिला
तेहने माटि पानि
गामो तेहने
खेत खरिहाँनमे
भरल धान पान

अनपढ़केँ
दी अक्षरक बोध
पोथी पढ़ि कऽ
ज्ञानी बनि ज्ञानकेँ
घर घर बाँटत

श्रमिककेँ दी
काज करैक ज्ञान
भुखलकेँ दी
दू रोटी भोर-साँझ
बनु नेक इसान

धन लगाबी
समाज कल्याणमे
हेतै विकास
आगूओ हितकारक
ज्ञानी करत काज

आँखि मिला कऽ
सभ हाथ मिलबे
दिल मिलबे
ने कोइ, जँ मिलबे
दिल, जग प्रेम बहै

दहेज रूपी
दानव केना एलै
जइ चक्कीमे
सभ पिसा रहल
सभ लूटा रहल

जाति धर्ममे
छोट छिन झगड़ा
अखन धरि
लोक सम्प्रदायमे
बँटल वौआइए

सभ दयालु
जग सुखी रहत
केकरोसँ नै
घृणा सभसँ प्रेम
जगकेँ छै कल्याण

जन कल्याण
समाजक निर्माण
शिक्षाक दान
देशक उत्थानमे
सभक जरूरी छै

रोगसँ देह
चिंतासँ चतुराइ
मनरोगसँ
सभ किछु घटैए
कहैए ज्ञानी कवि

बच्चा बेदरू
अनबुझ होइए
काम, क्रोध नै
निश्छल मन होइ
सभ प्रेम करए

रूप नै देखू
बेवहार चरित्र
नीकसँ देखू
जँ चरित्रमे दाग
तँ कलंकक बात

ज्ञानी ज्ञानसँ
योद्धा मारे तीरसँ
मुर्ख मारे
ठेंगा फोड़े कपार
पाप पुण्य नै होइ

जादू टोनामे
दृष्टि दोष होइए
मनक शंका
भ्रमित लोक सभ
नेत्रहीन सन-ए

घृणा नै करू
रोगीसँ, सेवा करू
तन मनसँ
प्राण बँचेतै धन
ओ धन उत्तम छै

मन चंगा तँ
कठौतीमे गंगा छै
दूषित मन
नर्कोसँ गन्दा होइ
कर्मे स्वर्ग सन छै

भूदानसँ नै
जीवन दान मिले
पैघ दान तँ
अन्न रक्त नेत्र आ
विद्यादान होइ छै

भावे भजन
अभावमे भोजन
दुखमे हरि
दर्शन होइत छै
संतोखे सुख होइ

अमृत वाणी
सुखक खान अछि
प्रेम अमर
पैघ धन विद्या छी
शेष नाश्वर अछि

फूल बिनु नै
फल बीज होइए
बिनु कर्म नै
सफलता मिलैए
श्रेमे धन बढ़ए

बरखा बून
तृण-तृण जगबै
धरती सजि
अन्न फल उपजे
जीव रक्षा करैए

बेसी खुशी नै
नीक होइत अछि
बेसी धनसँ
दुख दर्द बढ़ैए
बेसी लोभ मरैए

मध्यम मार्ग
सभ मार्गसँ नीक
दुख सुखक
संगम चिंतनसँ
सुख प्राप्त होइए

भक्तिमे शक्ति
जिनगीक गतिए
कर्मे धर्म छी
श्रमक प्रधानता
सुख शान्ति दइए

दुखक जड़ि
लोभ मोह माया छी
सुखक खान
निर्मल मनमेए
क्रोध मृत्यु आनैए

खिलल फूल
देख भ्रमरा नाचे
प्रेमिका देख
मोर मयुर नाचैए
प्रेमीकेँ सताबैए

मान सम्मान
रोटी वस्त्र मकान
सभकेँ चाही
गरीब अमीरमे
भेद भाव नै चाही

सुखक इच्छा
सभ करैत अछि
दुख इच्छा
नहि करैए कोइ
दुखेसँ सुख होइ

रौद छाहैर
दुनू संगे रहैए
तहिना संगे
दुख-सुख रहैए
जेना तनमे प्राण

पैसासँ वस्तु
खरीदल जाइए
नीन चैन नै
प्रेमसँ शान्ति मिले
जग सुन्दर होइ

धन बलसँ
घमण्ड बढ़ै छइ
श्रृंगारसँ तँ
सुन्दरता बढ़ैए
कर्मसँ यश धर्म

मृग तृष्णामे
वन वन भटकै
एलैए देखू
पानि जानि कऽ
तड़ैप प्राण दइ

माछ पानिसँ
नारी पति गहना
शेर वनसँ
बच्चा माए दूधसँ
बैर नहि करैए

पिता पुत्रसँ
विद्वान किताबसँ
लोभी धनसँ
सत्यवादी सत्यसँ
प्रेम करैत अछि

धान पानकेँ
बड़ मान होइए
धान पेटक
मान रखैत अछि
मुँहक लाली पान

मन हर्षित
गाबे मधुर गीत
भरल पेट
चैनसँ खींचे नीन
ने खुशी ने गम-ए

चिड़ै ने खाए
बेल नरियलकेँ
ने खाए राही
मुदा दुनू रहैए
ऊपरसँ कठोर

बीच कोमल
ऊपरसँ कठोर
दुनू दबाइ
बेल नारियलकेँ
पेटसँ बड़ मेल

माघक बाछी
चैत लगौल गाछी
भादोक कादो
चौरचनक दही
बड़ नामी होइए

लड्डू पान आ
धूप दीप फलसँ
देव पूजैए
प्रेम भक्ति बिनु नै
देव शक्ति मिलैए

प्रेम मार्गसँ
दोसर नै पैघ-ए
प्रेम बिनु नै
देवो खुश होइए
प्रेम दिल जोड़ैए

टुटल दिल
जोड़ल ने जाइए
प्रेमक बान्ह
बान्हल जाइत-ए
तोड़नौं ने टुटैए

सौनक मास
बिजुरी चमकैए
मेघ बरसै
धान रोपि गाबैए
सोहर समदौन

सावन मास
गरजैत बरसै
मन तरसै
भिजै छै तन मन
मन्द पवन बहै

दूध आगिसँ
पुष माघमे मेल
गर्मीमे दही
भोजन करै सही
खट्टासँ दूर रही

फागुन मास
रंग अबीर खेलै
फगुआ गाबै
ढोल मजीरा झालि
बजा खुशी मनाबै

जरूरी अछि
सौनक साग-पात
भादोक दही
आसिन कातिकक
शीतसँ बँचि रही

अमृत फल
अँबला कहबैए
आम फलमे
मधुरस होइए
फलराज शोभैए

माटि पानिसँ
अन्न उपजै छइ
खाए जीबैए
सभक छै कल्याण
बिनु अन्न मरैए

दुभिक घास
बड़ गुणकारी-ए
जीवन हित
कल्याण करैत-ए
धरती बँचबैए

घासमे दुभि
सभसँ उत्तम-ए
अमृत पीब
अमर कहबैए
सगरो भेटैत-ए

अमरलत्ती
अमर होइत-ए
अनके बले
जीबैत मरैत-ए
परजीबी होइए

गुरूचलत्ती
दबाइक गुरु छी
लाभकारी आ
रोगीक रोग हरि
सबल बनबैए

जादू मन्तर
टोना-टापर तँ छी
अन्ध विश्वास
तांत्रिकक जंतर
नहि छी छू मंतर

ज्ञानीक ज्ञान
हितकर होइए
अभिमानीक
ज्ञान कष्टदायक
गुरु ज्ञान उत्तम

गुरुक दान
वरदान होइए
अन्न दानसँ
जिनगी बँचैत-ए
जल तँ छी जीवन

बड़ कठिन
मनुख तन मिलै
लोभ मोहमे
फँसि घुमैत रहि
आगिमे जरि मरै

धर्मसँ पैघ
श्रम, कर्म होइए
अनुभवसँ
अकुर काज होइ
मुद्रासँ राजकाज

कला नाटक
पुरना संस्कृतिकेँ
बँचा राखैए
कलाकार कलासँ
दिल खुश करैए

गामक नाच
मृत भेल जाइए
वीर गाथाकेँ
लोक बिसैर गेल
खोजैबला नै कियो

गाम घर तँ
देशक प्राण अछि
शुद्ध पवन
हरियर खेतमे
स्वर्ग सुख भेटैए

फलमे पैघ
कटहर होइए
आन फलसँ
मान कम होइए
सब्जी, पका खाइए

पूजा पाठसँ
मन शान्त होइए
मुदा कर्मसँ
सफलता मिलैए
सत्य कर्म धर्म-ए

उथर नदी
उधियाइत रहै
गहींर नदी
चुप्पे-गुप्पे रहैए
ज्ञानी गहींर होइ

मान सम्मान
लेल सभ जीबैए
अपमान नै
सहैत अछि कोइ
दुनू कर्मसँ होइ

आम लताम
केला, बेल, शरीफा
सेव, पपीता
तरबूज आ खीरा
सभक हरै पीड़ा

दूध, दही, घी
मधु, मखान
धान, पान, माछसँ
बढ़े मान सम्मान
मिथिला छी महान

पानिक मान
दुनियाँ करैत-ए
बिनु पानि नै
जिनगी चलैत-ए
धराकेँ खींचैत-ए

कारी कोइली
प्रीतमकेँ बुलाबै
अधरतियामे
कूहू कूहू करि कऽ
सभकेँ जगाबैए

तोंता-मेनाक
खिस्सा बड़ पुरान
जे सुनैत-ए
अचरजमे पड़ि
सोचि शोग करैए

राजाक दुख
जनता बँटैत-ए
प्रजाक दुख
बाँटैत नहि कोइ
दुख सहि मरैए

गामक बेथा
कथा नहि सुनल
नहि देखल
सहल नै जाइए
कहै छी नै बाँटैए

सभक सभ
केकरो कोइ नहि
सभ मिल कऽ
कण-कण जोड़ि कऽ
युग निर्माण होइ

माए गाएकेँ
सेवा सभ करियौ
कर्म धर्मकेँ
जोड़ि, मोह छोड़ियौ
सदा सुखी रहियौ

दुख सुखक
संगम बीच रहि
कल्याण लेल
अपन श्रमदान
अर्थदान करियौ

चंचल चित
मन धबड़ाएल
स्वार्थी बनि
माया बजार बीच
सभ अछि घेरल

केकरा लेल
कानब जे हमर
नोर पोछत
निष्ठुर बनल-ए
स्वार्थी बनि ठकैए

मोह मायासँ
दूर रहि कर्मकेँ
करैत चलु
कर्म धर्म बिनु नै
मीठ फल मिलत

परिश्रमसँ
सभ डरैत अछि
बिनु श्रम नै
भूख मिटैत अछि
नै हएत प्रगति

भोरक तारा
उगल भुरुकबा
गमकै फूल
भोर पहर घुमु
रहत मन खुश

माटिक घैला
पानि निर्मल करै
सोना नै शुद्ध
संत उपकारी आ
ज्ञानीक वाणि सुधा

आगि नै बुझै
हवासँ, बुझै दीप
प्यास नै बुझै
भरल सागरसँ
कूप मिटबै प्यास

मठ मस्जिद
नै मिलै भगवान
वन घुमने
नै मिलै देव धर्म
प्रभु बसैए मन

रोगीक रोग
दवाइसँ छुटैए
मनरोग नै
छोड़बैए दवा
केना छुटत रोग

नेत्रदानसँ
पैघ दान नै अछि
जीवन दान
रक्तदान भूदान
सँ कल्याण होइए

सफलताक
करू नीक तैयारी
राति अपन
जागि करू तैयारी
प्रयास राखू जारी

देश खातिर
करब बलिदान
रक्षा करब
देशक छी कल्याण
काज छी ई महान

स्वर्गक सुख
नहि चाही हमरा
दुखमे मिलै
हरिदर्शन सुख
सुखक खान

मेहनतसँ
मिलै धन अपार
आलस अछि
दुखक पैघ बाट
काज करू विचारि

तीन बातसँ
राखब परहेज
मीठ बोलिया
चटगर भोजन
झूठसँ रहु कात

कन्यादानसँ
जगमे करू नाम
काज महान
समाजक कल्याण
नारीक छै उत्थान

पंच तत्वसँ
बनल छै शरीर
अनमोल छै
ई जिनगीक गाड़ी
अन्त किए होइ छै?

धानक बिआ
उखारि बोनिहार
गीत गाबैत
धान रोपैए खेत
सबहक खातिर

बच्चा कनैए
स्कूल जाइ खातिर
जरूरत छै
कॉंपी, कलम, पोथी
शिक्षाक छै जरूरी

दूध पीब कऽ
बच्चा पलैत बढ़ै
भविस बनि
उपकारी बनि कऽ
देश रक्षा करैए

माटिक मूर्ति
हिलै डुलै नै बोलै
किए मनुख
पान, फूल, प्रसाद
चढ़ा भक्त बनैए

मानव तन
लेल देवी देवता
तप करैए
दुर्लभ छै ई तन
देवोकेँ नै भेटैए

हाड़ मॉंससँ
बनल ई शरीर
नाश्वर अछि
की भेटैए तनसँ
मायामे फँसल-ए

राजा  सेवक
जनता छी मालिक
लोक उनटे
बुझैए सेवककेँ
राजा तँ मालिक छी

गरीब लेल
जेल जुर्माना अछि
नेताक लेल
कालाधन, खजाना
जनता छै दिवाला

सभ अपन
नहि कियो पराया
दुखक साथी
निभबे जे दोस्ताना
अनमोल खजाना

मोती मालासँ
शोभा बढ़ैत अछि
कंठी मालासँ
हरि भजन होइ
कोन उपयोगी छी

मजदुरक
श्रमसँ बनै टुटै
घर मकान
मालिक छी महान
श्रमिककेँ नै नाम

चान सुरुज
अकासमे चमकै
अपने कर्मे
लोक चमकैए
जगमे नाम होइ

आगि जरैत
सभ देखैत अछि
मन जरैत
नहि देखैए कोइ
किए अन्तर होइ

पानिक बून
मिलि नदी बनैए
सींचे धरती
प्यास बुझै सभकेँ
दाम नै दइ कोइ

मोट रोटीसँ
पेट भरैत अछि
नीक पोथीसँ
ज्ञान बढ़ैत अछि
दुनू राखैए मान

जरैत दीप
जगमग करैए
मुदा अपने
अन्हारेमे रहैए
जग हित करैए

देशक सेना
सुरक्षामे मरैए
देश गर्वित
मुदा परिवार तँ
शोकमे डुमल-ए

चोरक माल
सभ मिलि खाइए
उनटे चोर
फाँसी पर चढ़ैए
संगे कोइ नै जाइ

नाचे बानर
चौर खाए बबाजी
बानर कहै
माल अछि केकरो
कमाल करै कोइ

पढ़ल सुग्गा
बोली छै अनमोल
बन्द पिंजरा
कैद रहि कहैए
अजादी केना होइ

गाछक फल
सभ खाए जुराए
गाछ नै खाए
तैयो सभ फल
धर्महीत करए

धान पानसँ
मिथिलामे सम्मान
धोती-कुर्त्ता छी
गौरव पहिचान
स्वागतमे मखान

पकै फसल
कटनी दौनी होइ
कुइट, पीस
मधुर भोज बनि
सभक पेट भरै

बिनु खेने नै
पेट भरैत अछि
नहि देखने
नयन जुड़ाइए
नै ज्ञान मूर्ख होइ

प्रेमक बाट
पकैड़ सुख पाबै
स्वर्गक सुख
सफल जिनगीक
उत्तम फल अछि

हरिण देत
सियारक गवाही
दुनू भागि कऽ
जंगल चलि गेल
सजामे प्राण गेल

सौनक साग
भादवक दहीसँ
बँचल रही
आसीन कातिकक
शीतसँ बँचि रही

चंचल मन
चित्त घबराइए
जान जोखिम
पैर लड़खराइ
बाट नै देखाइए

चोर-चोर छै
मसियौत बनल
अधिकारी छै
पिसियौत बनल
प्रजा साधु किए छै?

आमक डारि
झुलुआ झुलै छेलौं
कोइली बोली
सुनि गीत गबैत
खुशीसँ हँसै छेलौं

बाग-बगीचा
लगबैत सींचैत
आम, लताम
खाइत जीबैत छेलौं
चैनसँ सुतै छेलौं

मोतीक माला
फेरैए धनवाला
हलुआ पुड़ी
खाइए दिलवाला
दूध बेचैए ग्वाला

खीरा छी हीरा
भोर पहर खाउ
नोन लगाए
साँझक पहर तँ
खीरा पीड़ा दइए

गंगाक पानि
अमृत समान छी
सागर मिलि
नोनगर बनैए
पीबिलो ने जाइए

देश अजाद
मुदा हम गुलाम
भूखले पेट
केना जश्न मनबै
स्वतंत्रता दिवस

मधु मिश्री घी
तीनू तँ अमृत छी
तीनू मिलि कऽ
पैघ विष बनैए
खाए लोक मरैए

पुरान अन्न
रागीक पथ्य अछि
पुरान लोक
समाज सुधारक
सर्वहितकारी छी

सभ महग
किछो ने अछि सस्ता
मुदा देशमे
खून चून बेचैनी
सभसँ सस्ता अछि

खोजलोसँ नै
भेटैए भगवान
मन मन्दिर
बसैए भगवान
जे पूजे से महान

आखि रहितो
अन्हरा बनल अछि
केना खोजतै
ज्ञान दीप जरै छै
सेहो आनहरे छै

सत्य वचन
पहाड़ सन भारी
हिले ने डुले
झूठ आँखिक धूल
सत्य अग्निवाण छी

सत्यक सोड़ि
पताल पहुँचैए
झूठक जड़ि
रूइयाँ सन हल्लुक
हवा उड़ा दइए

पशु पक्षी छी
मनुखक हितैषी
नहि करियौ
शिकार बलजोरी
जीब छी हितकारी

फूल गमकै
नित्य बहै पवन
चिड़ै चहकै
ओशसँ भिजै तन
सभकेँ भावै मन

चना चनैक
चैत मासमे पकै
शानसँ खाइ
धुधनी सतुआ
दालि सुपाच्य होइ

शीतल पानि
बँचबै छइ प्राण
गरम पानि
लइए जानि प्राण
नै बकसैए जान

शीत चाटने
नै मिटैए पियास
हाथ चाटने
नहि मिटैए भूख
पानि मिटबे त्रास

घर मन्दिर
मनमे भगवान
श्रद्धा शक्तिसँ
ज्ञान इमान बढ़ै
कर्म धर्म कल्याण

सत्य बाजि नै
सभ करैए काज
हरिनाम नै
जपैए इनसान
जिनगी छै हराम

झूठ बाजि कऽ
ठगि खाइ बेमान
इमान बेचि
भगवानो बेचैए
अमीर कहबैए

कर्मक फल
सभ भोगैत अछि
अधर्म किए
करैए सभ जानि
छूटै नै छै प्राण

नदी मौसम
बदलैत रहै छै
नै बदलै छै
भाग्य सत्य मृत्यु
नै बिगाड़ै छै कोइ

बेटी धन छी
अनमोल रतन
सभक हित
समाजक विकास
देशक छै कल्याण

विद्या धन तँ
सर्वोत्तम धन छी
बिनु विद्या तँ
लोक पशुसन छी
विद्या ज्ञानक खान

धनमे विद्या
स्थाइ उत्तम अछि
नहि मांगैए
राजा रंक फकीर
नहि छिनैए चोर

गाम स्वर्ग छी
किए शहरमे
नरक सन
जिनगी बितबै छी
आयुकेँ घटबै छी

साए रोगक
एक रोगी बनैए
संयम किए
नहि करैए लोक
दवा खाए मरैए

खान पानसँ
करू रोग निदान
दियौ धियान
जड़ी-बुटी खाए कऽ
रोगसँ पाऊ छुट्टी

आत्मा शरीर
दुनू दुख सहए
आत्मा अमर
शरीर नाश्वर छी
एना किए होइए

हाड़ मांससँ
बनल ई शरीर
मरणशील
तँ किएक कुकर्म
करैए लोक जानि

ज्ञान बढ़बे
धन मान सम्मान
पाप घटबे
इमान, धर्म, यश
सत्य कर्म महान

चंचल मन
यौवन क्षणिक छी
दुख सुखसँ
जिनगी सजैत-ए
विद्या धन स्थायी  छी

राम राज्यक
सपना देखलैन
महात्मा गांधी
मुदा रावण राज
कहिया खत्म भेल?

मौत, ग्राहक
इन्तजार नै करै
वलवान नै
मनुख होइत-ए
काल वलवान छी

मोह-मायामे
सभ फँसल अछि
मोक्ष मिलतै
सदगुण कर्मसँ
अधर्मी नर्क जेतै

रोजगारसँ
चलैत-ए जिनगी
नहि होइ छै
भूखमरी बैसारी
सभकेँ छै जरूरी

यौन शोषण
दहेज उत्पीड़न
भ्रूण हत्या छी
कैंसर सन रोग
बड़ पैघ चुनौती

जग सुन्दर
मनुख अज्ञानी-ए
आन जीवसँ
सीखब जरूरी-ए
ज्ञानीक कहब-ए

भेद कुभेद
बीच मनुख रहि
विष विषाह
बनि कऽ सतबैए
समाजकेँ तोड़ैए

जीव जीबक
सम्बन्ध अटुट-ए
जीबे जीवक
दुश्मन बनल-ए
न्याय की कहैत-ए?

आगू बढ़ब
आनकेँ पछाड़ब
पछुआएल
सभकेँ छोड़ि आगू
बढ़ब हिनता छी

झूठ वचन
साँच नहि होइए
सभ छी झूठे
जौं कहै एको साँच
से दुनियाँमे होइ

मनक मैल
भावना बिगड़ैए
दिशा बिगाड़ि
जिनगीक चालिकेँ
कुबाट पकड़ैए

खरकट्टल
जे रहए मनक
मैलक धब्बा
छुटल नै उपाय
मन भेल कुपित

हिन भावना
चरित्र बिगाड़ैए
जीव जीवमे
भेद करि लड़बैए
दुखे दुख सृजैए

अद्भूत अछि
जगतक जे लीला
जीवे जीवकेँ
संघारक बनल
की उचित होइए?

श्रम करैत
जिनगी बितेलक
साग पातकेँ
खाए दुख सहल
केना सुख पावत

नीति कुनीति
बीच बेवस्था अछि
दू नजैरसँ
दुनियाँकेँ देखैए
दीन दुख सहैए

तकदीरमे
गरीबी लिखल-ए
दुख काटैले
जेना जनमल-ए
ईश्वरो कुपित-ए

केना भेटतै
सुख, जेकर दुख
जनमाऊ छै
सुखक छाहैर तँ
दूरेसँ भागल छै

कोसी कमला
बीच बलान बहै
निर्मल गंगा
स्वर्ग सन मिथिला
पवित्र धाम कहै

आम लताम
अनरनेबाक छै
उत्तम खान
धान पान मखान
मिथिलाक छी शान

कुकुर कहीं
आगि पकैए, ठक
कहीं उपास
कहैए धर्म दास
संत पड़ै उपास ❑

# हाइकू/शैन्र्यू

अमृत वाणी
छानि कऽ पीबू पानि
नै कोनो हानि

गरीबक छी
मरूआ खान-पान
बँचबे प्राण

रोटी, कपड़ा
मकान, शिक्षा, स्वास्थ
सभकेँ चाही

मनक प्यास
बुझे ने मजबुरी
आदत बुरी

एक तँ चोरी
दोसर सीना जोरी
की छै जरूरी?

ज्ञानक खान
वेद पुराण अछि
ज्ञानी महान

कर्मे चलैए
जिनगीक सवाड़ी
नै तँ भिखाड़ी

जीबाक इच्छा
सभकेँ छै दीर्घायु
कम छै आयु

नाचे बानर
माल खाए मदारी
की छै लचारी?

तुलसी एक
साए गुण भरल
पूज्य बनल

आँवला फल
अमृत फल अछि
गुण भरल

आमक फल
अछि फलक राजा
खाइतो माजा

ज्ञान दानसँ
पैघ नै कोनो दान
कर्म महान

धैलिक पानि
ज्ञानी संतक वाणी
नै कोनो हानि

मेघ बरसै
वादल गरजैत
बेंग बजैत

हवा बहैत
दिन-राति चलैत
जीवन दैत?

रोगसँ रोगी
तड़ैप मरैए तँ
प्राण के देत

राम नामकेँ
बदनाम करैए
सभ भजैए

साँझ समय
सुरुज डुमैत-ए
दीप जरैए

अन्नक संगे
घुनो पिसाइत-ए
तन संगे मन

पुरान पोथी
इतिहास, साहित्य
बँचा कऽ राखू

नशा करैए
विनाशकारी काज
लइए प्राण

नशा सेवन
शरीर आ आत्माकेँ
हानि करैए

रंग नै कच्चा
ओहेन रंग रंगु
जे होइ पक्का

जन्म मरण
निश्चित होइत-ए
नाश्वार किए?

देशक राजा
प्रजा मिलि चुनैए
मुदा, आन्हर

दूतीया चान
बढ़ैत ऊपर चढ़ै
पूर्णसँ घटै

मेघ बरसै
धनरोपनी करै
अन्न उपजै

फसल पकै
कटनी दौनी करै
कोठी भरैए

अन्नक दान
सभकेँ बँचै प्राण
करू कल्याण

सभक मान
रखै छइ किसान
धानसँ मान

धान मखान
माछक खान पान
पानसँ मान

हवा दोमैत
इजोरिया जरैत
प्रेमी तरसै

दुखित मन
अन्हरिया छै राति
दिल धड़कै

माया नगरी
पहुना हेराएल
केना खोजब?

फलमे केरा
सभक राखे मान
सस्ता समान

नारियलक
फल बड़ कठोर
बीचमे जल

हाटक चौर
बाटक पानिसँ, नै
कटत दिन

आँखिक नोर
आ ओश चटनेसँ
नै मिटै प्यास

दिलक बात
कहै भौंरा फूलसँ
प्रेम अमर

चिड़ै चहकै
एकताक पाठ छै
उत्तम गुण

संकल्प नेने
चींटी चढ़ै उतरै
लक्षक ओर

नेता, नायक
झूठे करै वणिज
मूर्ख बनबै

बालुक भित
शीतसँ पटौनी नै
होइत अछि

जीवन मृत्यु
निश्चित होइत छै
तै अमर के

बाट चलैत
मुरि-मुरि देखैत
संगी नै कोइ

लाठी ठेंगैत
ठोकरसँ बँचैत
आगू बढ़ैत

आँखि नै सुझै
बिनु सहयोगीकेँ
बाट चलैत

प्रेमक भूख
भोजनसँ नै मिटै
आत्मा भटकै

जीवन नैया
मजधार फँसल
धर्म खेबैया

गाए-माइक
सेवासँ मिलैए
उत्तम मेवा

सुखक खान
कर्म अछि प्रधान
सभक मान

ज्ञानसँ करू
जगतक कल्याण
भेटत मान

ज्ञानक खान
गीता, वेद, पुराण
पढ़ु मनसँ

आम लताम
सभक राखै मान
गुणक खान

खान पानमे
दूध, दही, फलसँ
शान बढ़ैए

माए-बापकेँ
भोरे करू दर्शन
हरि दर्शन

गीत संगीत
मन हर्षित करै
दुख हरए

नदी कातक
चास-बासकेँ नहि
कोनो आश

कागजपर
लिखलाहा नाम तँ
अमर नहि

वन पर्वत
नै मिलै भगवान
मनमे राम

बुढ़ पुरान
अनुभवी होइए
करू सम्मान

मिथिलामे छै
पाबैन तिहारक
बेसी चलैन

लेखक, कवि
दुनियाँकेँ बनबे
जनकेँ ज्ञानी

रोटी कपड़ा
मकान शिक्षा स्वास्थ
जरूरी अछि

दिवाली संगे
अबैत अछि जाड़
होलीमे जाए

कर्मक मान
दुनियाँमे होइ छै
कुकर्मक नै

गाछक फल
खाए जुराए
गाछ नै खाए

जीबाक इच्छा
सभकेँ छै दीर्घायु
कर्ममे पाछू

हिंसा नै करू
अहिंसासँ कल्याण
कर्म महान

मान सम्मान
सबहक करियौ
सभ सीखतै

वृक्षा रोपन
सर्व हितक काज
जीव जन्तु ले

नेत्र दानसँ
नै कोनो पैघ काज
जग देखैले

अंग दानसँ
दोसरकेँ कल्याण
उत्तम काज

रक्त दानसँ
दोसरकेँ बँचैए
जिनगी प्राण

ज्ञानी, सज्जन
समाजक अमृत
बढ़बे ज्ञान

मीठ वचन
अकुर काज करे
नै कोनो हानि

दोस्त करैए
दुखमे हितकाज
नै बदनाम

लालची मित्र
कुकुर समान-ए
हानि करैए

तन बदैल
रूप देखबैत-ए
आत्मा एक-ए

समाजमे नै
बुजुर्गक मान छै
करू सम्मान

नीमक गाछ
रोगक किटाणुकेँ
मारि भगाबे

माटिक मूर्ति
फूल फल ने खाए
बलि पड़ैए

अनरनेबा
पित्त वायु नाशक
पैघ पाचक

आँखि रहितो
जे आन्हर होइए
तँ की कहबै?

खजूरक छै
राजस्थानमे मान
शक्तिवर्द्धक अछि

ताड़ गाछसँ
ताड़ी चुबबैत छै
नशा खातिर

पानसँ राखे
मेहमानक मान
मिथिला जन

फूलक सेज
नीन चैन नै होइ
मरणासन

कुकर्म अछि
नरकक समान
छे बदनाम

श्रमदानक
छै दुनियाँमे मान
होइ कल्याण

फूलक शोभा
गंध उड़ै अकास
स्वर्गक वास

श्रमिक बले
देश भेल महान
मुदा गरीब

खेत उपजै
छै अन्न, फल, साग
सभक लेल

झूठ वचन
बोलि जँ हित हुए
नै कोनो हानि

फलक राजा
आम जे खाइए से
पहलवान

बासि भोजन
नै खाउ जानि प्राणि
हएत हानि

पानि दूध छै
दुनू अमृत सन
बँचाबे प्राण

खीरा छी हीरा
भोर खाउ नोनसँ
नहि तँ पीड़ा

राति जगैए
दिन सुतै नित्य
केतए बास

देश कंगाल
दलाल केने अछि
माल हरैप

घासमे दुभि
धनमे गाए अछि
कल्याणकारी

माघक जाड़
दीनकेँ सतबैए
हिलबे हाड़

जाड़क रौद
सभकेँ मन भाबे
जाड़ भगाबे

मालिक चोर
मुंशी कोतबाल-ए
संत भण्डारी

भोज भारी
दालि अछि खेसारी
खाए भैयारी

अन्हरा राजा
बहिरा अछि मंत्री
बौक छै प्रजा

रोगीकेँ भावे
से वैद्य फरमाबै
जान गमबै

घड़ी चलै छै
दिन-राति समान
लोक कीए ने?

दुखसँ भारी
मनरोग होइ छै
लाइलाज छै

ज्ञानक सुख
असल सुख अछि
धन सुखसँ

कर्मक फल
सभ भोगैत अछि
कर्मवीर के?

धन खर्चासँ
कर्मक खर्चा नीक
जेना बरखा

फुटल भाग्य
कर्मसँ बनैत-ए
जँ धर्मी होइ

खेलसँ बढ़ै
धिया-पूतामे मेल
नै कोनो भेद

भजन करै
साधु, संत, पुजारी
खाए महंथ

फल खाइक
सभकेँ इच्छा अछि
रोपे ने गाछ

अन्हरा नाचे
बहिरा सुनि हँसे
डीठरा सुते

सोना चानीसँ
अमीर मालोमाल
देश कंगाल

भोजनमे छै
साग पातक मान
केकरा लेल?

गाइक दूध
दही, घी, गोंत अछि
दबाइ सन

नीमक छाल
पत्ता, फड़ दबाइ
राखे निरोग

लाजक खान
लजैनी छै महान
अनेको काज

विद्वानक छै
मिथिलामे खान  तेँ
जगमे नाम

मिथिला नाम
बड़ पैघ पुरान
छी कर्म स्थल

विवेकी ज्ञानी
बुधिसँ करै काज
अनका लेल

जल सभक
जिनगी बँचबैए
भूमि सींच कऽ

बहु विवाह
गरमेल जोड़ी तँ
अभिशाप छी

यौन शिकार
देहक बेपार तँ
देशक मुद्दा

स्त्री उत्पीड़न
समाजक शोषण
अपराध छी

संघर्षशील
गतिशील होइए
जिगनी लेल

सुविद्या अछि
गुणवत्ता घटल
महग भेल

स्तनपानसँ
बच्चा निरोग छै
कोनो नै हानि

युगक जुआ
कवि लेखक खींचे
मरितोदम

खेतीक काज
दुनियाँक राखैए
सभक लाज

पानि छुबाइ
दूध नै छुबाइए
कारण की छी?

अन्न जलसँ
पोसाइत-ए काया
लोभसँ माया

कुकर्माहाकेँ
नरको जाइत नै
लाज होइ छै

अनुभवसँ
मिलैए रोजी रोटी
पोथीसँ ज्ञान

सभ चाहैए
अनकर हरैप
धनिक बनी

इनसाफ नै
मिलैए अदालतमे
न्याय बिकै छै

खुदा जनैए
इनसाफक बात
इनसान नै

राति खाइ छै
दिन लेल झखै छै
नेक मरै छै

मौसम जकाँ
बदैल खेलु खेल
शरीर लेल

रोगी रोगसँ
पीड़ीत रहैत छै
भोगीकेँ दूना

भाग्य नै बाँटै
नहि चोराबै कोइ
जाने ने कोइ?

भाग्यक खेल
चमतकारी होइ
जाने विधाता

हिन भावना
विकासक बाधा छी
कुकर्म सन

जलक मान
सभसँ छै महान
बँचाबे प्राण

खेल-खेलमे
सभसँ राखू मेल
नै कोनो झेल

शैतान करे
जानि कऽ परेशान
मारए जान

माइक गोद
धरतीक बिछौना
नै छै तुलना

दीप जरिते
फतींगा जरि मरे
कोन गलती?

विद्या धन तँ
खर्चासँ बढ़ैत-ए
संगे कल्याण

खान-पानमे
सचेत रहु जानि
नै हुए हानि

पैघ चुनौती
दऽ रहल कुरीति
तोड़ैत नीति

सतीत्व लेल
सीता देली परीक्षा
बिनु धोखेसँ

जीव जन्तुक
जिनगी गतिशील
मरणशील

खेल कूद छै
बच्चा लेल जरूरी
विकास लेल

काम अराम
भोजन दुनू साँझ
नैए समान

सुख दुख छै
सभकेँ जनमेसँ
मरने मिटै

सियार भालू
पैघ होइए चालु
नै ए कमाउ

कलम लिखे
तकदीरक खेल
खुदा हुक्मसँ

सेवा संस्थान
करैए काज
कल्याण लेल

फाँसीक फंदा
गर्दनिमे पड़िते
देख मरैए

बाहर मान
घरमे बदनाम
करैए हानि

हितक काज
अपन हुए हानि
बढ़बे मान

प्रेमक मार्ग
स्वर्ग समान अछि
शान्तिक मार्ग

जेहने खाए
अन्न तेहने होइ
छै तन मन

पोथी पुराण
पढ़े ज्ञानी महान
ज्ञानक खान

ज्ञानीक मान
महाज्ञानी करैए
राजा शलाम

सौनक राति
बिजुरी चमकैत
मेघ बरसै

भादोमे कादो
धान रोपे किसान
बाढ़िसँ हानि

आसिन मास
हथिया झाँट बहै
घर खसबै

कातिक मास
किसान देखे चास
मन उल्लास

धानक खेत
लहलहाति देख
सजै खम्हार

धान पकए
कटनी दौनी करि
कोठी भरए

अगहनमे
चोरो साधु बनि कऽ
अन्न समटे

पुसक मास
दिन राति पड़ैए
ओस कुहेस

माघक राति
कनकनी जाड़सँ
हिलैए हाड़

फागुन मास
वसंत करै राज
गमकै बाग

चैत मासमे
चना गहुम पकै
गाछ कलशै

बैशाख मास
धरती जरैत-ए
तबा समान

जेठक मास
धरतीकेँ बुझबै
मेघ पियास

अषाढ़ मास
धानक बीआ गिरा
खेत गजारे

सौनक बून
मोती बनि गिरैए
धरा सजैए

सोना बिकैए
तौल-तौल महग
माटि अमुल्य

इमान घटि
बेमान तँ बनैए
पेट खातिर

आम लताम
दीनक राखे मान
बढ़बे शान

धान मखान
मिथिलाक छी शान
पानसँ मान

गुलाब फूल
काँटक संग रहि
मन लुभाबे

दुख सुखक
बीच गुलाब रहि
सुगंध बाँटे

मैथिली बोली
मधुर जनभाषा
सभक आश

आगि पानिकेँ
जरबैए, पानि तँ
बुझबे आगि

कुकुर कहीं
आगि पकैए ठग
कही उपास

एक मार्ग-ए
सुमार्ग मनुखक
सत्य अहिंसा

सुखक फल
हित सेवा कल्याण
मिलत त्राण

कोइली कूक
सुनि मन हुलसै
नैन बरसै

धनी बनब
सभक इच्छा अछि
दीन किए ने?

जेल जुर्माना
सुधारे ने जमाना
नहि इंसान

हाथ आएल
शिकार छुटि गेल
छगुन्ता भेल

नहि भेटल
माए-बापक प्रेम
छी भाग्यहीन

संघर्षशील
कर्मशील जिनगी
श्रेष्ठ होइए

फटीचरक
पहिचान बेढंगा
बुझू लफंगा

अश्रु पीब कऽ
जेना शोकाकुल छी
मरले बुझू

समस्या भारी
बेमारी फौजदारी
छी कष्टकारी

अनरनेबा
फल गुणकारी
औषध भारी

पेटक दुख
हरै अनरनेबा
खाइमे मेबा

अनरनेबा
उपजै बाड़ी झाड़ी
हरे बेमारी

अनरनेबा
पेट भरूआ फल
छी हितकारी

सुखले सौन
कारी मेघ रूसल
कृषि मरल

सुखल खेत
देख किसान काने
भूखे पियासे

दरारि देख
माथा ठोके किसान
तेजए प्राण

अन्न अम्बार
जे खेत उपजाबे
सुख नै पाबे

भूखले पेट
मजदुर मरैए
देखैबला के?

मन मोहिया
मोह मायामे फँसि
लोभी मरैए

मांगत भीख
केना जीअत दीन
की उचित छै?

शोक संताप
गरीबकेँ भेटल
वरदानमे

गरीबसँ तँ
भगवान बेमुख
सुखसँ दूर

केना जीबत
गरीबक संतान
नै छी इंसान

नै छै खिलौना
खाइले नै छै खाना
पृथ्वी बिछौना

दुख भोगैले
गरीब जनमल
विषके पीतै?

सभ इंसान
हैवान बनल-ए
सुधारत के?

मोह-मायामे
फँसि लोक मरैए
बँचाएत के?

लोभ-मोह तँ
मनुखक दुश्मन
तियागत के?

क्रोध आगिसँ
ज्वलनशील अछि
बँचि कऽ रहू

दुख भरल
लोकक जिनगीए
खोजैए सुख

सुख दुखक
जिनगी मधुर छै
मध्यम मार्ग

जे दुख सहि
जीबैए शुद्ध सोना
सन होइए

जे नै सहैए
भूख ओ की बुझत
आनक दुख

खुआ खाए कऽ
जे चैनसँ सुतैए
दुख के लेत

फुटहा खाए
दुख काटि जे जीलै
केकरा लेल

सभक हिस्सा
मारि जे खेलक
दोषी के हेतै?

कहै लेल तँ
सभ संतोषी अछि
अधक्की के छी?

रोग निदान
संयमसँ होइए
भोगी सृजैए

पोड़ो, बथुआ
गरीबक साग छी
सेहत लेल

पोष्टिक साग
पोड़ो, बथुआ खाए
गिरहतुआ

साग पतार
देहक रक्षा करि
रूचि बढ़ाबे

सागक गुण
सभ नहि बुझैए
सस्ता भेटैए

सुखक बाट
भोगी पकड़ैए तँ
दुख के लेत?

कर्महीन नै
पुरुषार्थ होइए
नर्क भोगैए

विपत्ति सहि
इमान बँचबैए
स्वर्ग पाबैए

बिगड़लकेँ
साहित्य सुधारै छै
ढोंगी छोड़ि कऽ

अपन हित
दोसरकेँ अहित
स्वार्थी करैए

प्रेम मार्गसँ
देश समाज सजि
आगू बढ़ैए

प्रेमक बाट
पकैड़ जे चलैए
सुख पाबैए

ई जिनगी नै
नहि जीबै मरै छी
अधमरू छी

सत्य बात आ
अमृतवाणि बाजु
नै हेतै हानि

जीवन मृत्यु
सभक सत्य अछि
माया घेरैए

दुख सुखकेँ
समरूप भोगैत
जीबैत चलु

मनक शुद्धि
साहित्य करैत-ए
सुख दइए ❑

**राम विलास साहु** करवनो कर्मयोगी बनि जाइ छथि जेना ऐ हाइकूमे :-

कर्मे चलैए
जिनगीक सवाड़ी
नै तँ भिखाड़ी

तँ कखनो दार्शनिक जेना एतऽ :-

जीवन मृत्यु
निश्चित होइत छै
तै अमर के

हाइकू आ टनकामे किछु शब्दमे गपकेँ, भावनाकेँ, अपन आत्म आ विश्व दर्शनकेँ देखेबाक अवसर भेटै छै, जे रामविलास जी देखबै छथि, दर्शक बनि कऽ। किछु हाइकू-टनका गहींर अछि तँ किछु उत्थर आ ऐ उत्थरकेँ गहींर करबाक भार हिनकर अगिला संग्रहपर छनि।– **गजेन्द्र ठाकुर**

**लेखक परिचय :**

नाम- राम विलास साहु, पिताक नाम : स्वर्गीय नशीव लाल साहु, माताक नाम : श्रीमती कैली देवी, पत्नी : स्वर्गीया मंजुला देवी। पैतृक गाम : लक्ष्मीनियाँ (छजना) जिला- मधुबनी। मातृक : हिरपट्टी (बनगामा) जिला- मधुबनी। जन्म तिथि : 01 जनवरी 1957

शिक्षा : 'निर्मली महाविद्यालय निर्मली'सँ स्नातक। वृति : 'ज्ञान भारती' पब्लिक स्कूल-निर्मलीमे प्राचार्य पदपर 14 वर्ष धरि कार्य केलाक बाद वर्त्तमानमे कृषि (खेती-बाड़ी) कार्य।

**सम्पर्क :** 9955802522, 8863058834, इमेल : rambilaskavi2011@gmail.com

सहायक सम्पादक : 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका।

साहित्य लेखन : 2008 इस्वीसँ...।

सम्मान/पुरस्कार : नरेन्द्र सम्मान- 2018, लेखकीय सम्मान- 2018

**प्रकाशित कृति :** 1. 'रथक चक्का उलैट चलए बाट' (पद्य संग्रह), 2. 'अंकुर' (बीहैन एवम् लघु कथा संग्रह), 3. 'दुधबेचनी' (लघु कथा संग्रह), 4. 'कोसीक कछेर' (कविता संग्रह), 5. गामक सुख (कविता संग्रह), 6. 'मनक मैल' (टनका/हैकू/शैर्न्यू संग्रह)

अप्रकाशित कृति : 1. 'आगिये आगि' (कविता संग्रह), 3. 'नेत्रदान' (खण्ड काव्य), 4. 'अंशुमान' (कथा संग्रह)

***पता :*** *Village : Laxminia, Post : Chhajana, Via : Narhia, District : Madhubani, Bihar : **847108***

(उपरोक्त पोथी सबहक e-version videha.co.in तथा pothi.com पर सेहो उपलब्ध अछि)

₹ 200

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9 789388 421812